दैनिक

नर्मदापुरम् जिले का प्रथम दैनिक

K ✌ K

RNI No.61546/95

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

नर्मदापुरम् संभाग सीहोर जिले एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा वर्ष-31 अंक-65 नर्मदापुरम (होशंगाबाद) गुरूवार 17 अप्रैल 2025 पृष्ठ-8 मूल्य -1 रूपये सम्पादक- कृष्णकान्त सक्सेना

वक्फ पर सुप्रीम कोर्ट में बहस, सीजेआई बोले- आर्टिकल 26 धर्मनिरपेक्ष, यह सभी पर लागू

नई दिल्ली, (आरएनएस)। वक्फ कानून को लेकर बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई जारी है। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष इस अहम मामले में वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने अपनी दलीलें रखनी शुरू कीं। याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने बहस की शुरुआत की, जिसके बाद अभिषेक मनु सिंघवी ने अपनी दलीलें पेश कीं।

सिब्बल ने अनुच्छेद 26 का जिक्र किया। फिर कहा अगर मुझे वक्फ बनाना है तो मुझे सबूत देना होगा कि मैं 5 साल से इस्लाम का पालन कर रहा हूं, अगर में मुस्लिम ही जन्मा हूं तो मैं ऐसा क्यों करूंगा? मेरा पर्सनल लॉ यहां पर लागू होगा। अगर वक्फ बनाने वाला कागजात देता है तो वक्फ कायम रहेगा। इस पर सीजीआई ने कहा अनुच्छेद 26 धर्मनिरपेक्ष है और ये सभी समुदायों पर लागू होता है।

वहीं, अधिवक्ता सिंघवी ने कोर्ट के समक्ष कहा कि देशभर में करीब आठ लाख वक्फ संपत्तियां हैं, जिनमें से चार लाख से अधिक संपत्तियां 'वक्फ बाई यूजर' के तौर पर दर्ज हैं। उन्होंने इस बात को लेकर चिंता जताई कि वक्फ अधिनियम में किए गए संशोधन के बाद इन संपत्तियों पर खतरा उत्पन्न हो गया है।

सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने कहा कि जब वे दिल्ली हाईकोर्ट में थे, तब उन्हें बताया गया था कि वह जमीन वक्फ संपत्ति है। उन्होंने कहा, हमें गलत मत समझिए, हम यह नहीं कह रहे हैं कि सभी वक्फ बाई यूजर संपत्तियां गलत हैं।बहस के दौरान सिंघवी ने यह भी कहा कि उन्हें यह तक सुनने में आया है कि संसद भवन की जमीन भी वक्फ की है। उन्होंने कोर्ट से पूछा कि क्या अयोध्या केस में जो फैसले दिए गए, वे इस मामले में लागू नहीं होते? उन्होंने संशोधित वक्फ अधिनियम पर अंतरिम रोक लगाने की मांग की और कहा कि जब तक इस पर अंतिम निर्णय नहीं आता, तब तक संशोधन लागू नहीं किया जाना चाहिए।इस बीच, अधिवक्ता हुजेफा अहमदी ने भी कहा कि अधिनियम की धारा 3(आर) के तीन पहलुओं पर ध्यान देना जरूरी है। खासकर इस बात पर कि 'इस्लाम का पालन करना' यदि आवश्यक धार्मिक अभ्यास माना जाता है, तो इसका प्रभाव नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर भी पड़ सकता है। अहमदी ने कहा कि यह अस्पष्टता पैदा करता है।

धार्मिक स्थल को लेकर उड़ी अफवाह के बाद बवाल, भीड़ ने पुलिस और निगम टीम पर बरसाए पत्थर; 31 पुलिसकर्मी घायल

नासिक(आरएनएस)। नासिक के काठे गली इलाके में मंगलवार रात पुलिस पर पथराव किया गया। यह घटना तब हुई जब क्षेत्र में बिजली कट गई और इसी अंधेरे का फायदा उठाकर भीड़ ने अचानक पुलिस, नगर निगम कर्मी और आसपास खड़े वाहनों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। इस हिंसक घटनाक्रम में 31 पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि पांच वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए हैं। हंगामे की वजह एक धार्मिक स्थल को लेकर उड़ी अफवाह बताई जा रही है। स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए पुलिस को तत्काल कार्रवाई करनी पड़ी। रात में करीब 500 पुलिसकर्मियों को मौके पर तैनात किया गया ताकि हालात और न बिगड़ें। बताया जा रहा है कि हंगामे के समय करीब 400 से 500 लोग मौजूद थे। पुलिस ने किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए इलाके में ट्रैफिक मार्गों में बदलाव भी कर दिए हैं।

दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ नई दिल्ली में अकबर रोड स्थित एआईसीसी मुख्यालय में कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा आरोप दायर करने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया।

सिलक्यारा टनल आस्था और समर्पण की शक्ति का जीवंत उदाहरण : सीएम धामी

देहरादून (आरएनएस)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी बुधवार को सिलक्यारा सुरंग के ब्रेकथ्रू कार्यक्रम में शामिल हुए। गौरतलब है कि वर्ष 2023 में निर्माण के दौरान 41 श्रमिक 17 दिनों तक सिलक्यारा सुरंग में फंस गए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और सीएम पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में चलाए गए रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान सभी मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था। सिलक्यारा सुरंग चारधाम यात्रा की दृष्टि से महत्वपूर्ण परियोजना है।

सोनिया-राहुल गांधी और सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल, कांग्रेस कार्यकर्ताओं का ईडी दफ्तर के बाहर प्रदर्शन

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और ओवरसीज कांग्रेस प्रमुख सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। इस कार्रवाई के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया है।कांग्रेस का आरोप है कि केंद्र सरकार राजनीतिक विरोधियों को दबाने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। पार्टी ने इसके विरोध में देशभर में आंदोलन का ऐलान किया है। राज्य मुख्यालयों में ईडी कार्यालयों के बाहर और जिलों में केंद्र सरकार के दफ्तरों के सामने विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं।

राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के खातों में सिंगल क्लिक से 1552.38 करोड़ रूपये अंतरित

मां, बहनों और बेटियों के लिए हमारी सरकार हमेशा उनके साथ दहेज, मृत्युभोज से बचें, अपने बच्चों को पढ़ायें-लिखायें और समर्थ बनाएं

मंडला/भोपाल(ए.)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि माताओं, बहनों और बेटियों के हित में हमारी सरकार हमेशा उनके साथ हैं। इनके लिए सरकार कोई कसर नहीं रखेगी। बहनों को हमारी सरकार उनका हर वाजिब हक दिलायेगी। राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो, इसे बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। देश की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़े, इसके लिए आगामी वर्षों में लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का लाभ मिलेगा। मध्यप्रदेश सरकार पहले ही निकाय चुनावों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू कर चुकी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को मंडला जिले के टिकरवारा गांव में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहाँ आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में प्रदेश की लाड़ली बहनों सहित अन्य योजनाओं के हितग्राहियों को सिंगल क्लिक के जरिए 2500 करोड़ से अधिक की सम्मान एवं सहायता राशि अंतरित की। उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट टीम में चयनित होने के लिए सुश्री शुचि उपाध्याय का मंच से अभिनंदन भी किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न योजनाओं में हितलाभ और युवाओं को नियुक्ति-पत्र भी वितरित किये।मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा प्रदेश की 1.27 करोड़ बहनों को 1552.38 करोड़ रुपए, 56.68 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 340 करोड़ रुपए, प्रधानमंत्री उज्ज्वला गैस योजना में पात्र 25 लाख बहनों को 450 रुपए में सिलेंडर रिफिलिंग के लिए 57 करोड़ रुपए की राशि अंतरित की गई। सरकार द्वारा अब तक लाड़ली बहनों को 36 हजार 500 करोड़ रुपए से अधिक की सम्मान राशि प्रदान की जा चुकी है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला के विकास को गति देने के लिए 232 करोड़ रुपए की लागत वाले 66 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके की मांग पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला जिले में सुरखी-इंद्री मार्ग पर 16 करोड़ 61 लाख रुपए की लागत से नया पुल बनाने और बंजर नदी में नवनिर्मित एक अन्य पुल का लोकार्पण कर इसका नामकरण अमर शहीद शंकर शाह रघुनाथ शाह सेतु करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंडला के विकास में सरकार कोई भी कमी नहीं छोड़ेगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना के अंतर्गत सामूहिक विवाह समारोह में परिणय-सूत्र में बंधे 1100 से अधिक नवविवाहित दंपत्तियों पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि आज नवविवाहित दंपत्तियों को 49-49 हजार की राशि प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 16 संस्कारों में विवाह सबसे बड़ा होता है। नवदंपत्ति नए संकल्पों के साथ सपनों का संसार बसाने के लिए आगे बढ़ते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में कमाई का एक हिस्सा बचाएं जिससे भविष्य में अपने साथ बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित हो सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोगों से विवाह समारोह पर बेहिसाब खर्च से बचने का सुझाव देते हुए कहा कि कन्या विवाह/निकाह योजना के सामूहिक विवाह में शामिल होकर कोई भी कम खर्च में धूमधाम से शादी कर सकता है।

लाड़ली बहनों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए संकल्पित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार लाड़ली बहनों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए संकल्पित है। महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान, स्वाभिमान और समृद्धि प्रदान करने के लिए हर महीने बहनों के खातों में राशि भेजकर रक्षाबंधन मनाया जा रहा है। अगर बहनों के हाथ में कुछ पैसा आए वो पूरे घर का समुचित प्रबंधन करती हैं। आज बहनों को उज्ज्वला योजना, पक्के मकान जैसी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। प्रदेश सरकार नागरिकों के सुख-दुख की चिंता करते हुए गरीब, महिला, युवा और किसान सभी वर्गों के कल्याण के लिए प्रयासरत है। किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सोलर पंप बांटे जाएंगे, जिसका लाभ प्रदेश के 5 से 10 हॉर्स पॉवर पंप वाले किसानों को मिलेगा। साथ ही बिजली विभाग सरप्लस बिजली किसानों से खरीदेगा।

सॉरी ! घर गिराने के बाद नगर निगम ने मांगी माफी, बोला- सुप्रीम कोर्ट का आदेश पता नहीं था

मुंबई (आरएनएस)। सांप्रदायिक हिंसा के आरोपियों की संपत्तियों पर कार्रवाई को लेकर सुप्रीम कोर्ट की स्पष्ट हिदायतों के बावजूद नागपुर नगर निगम (एनएमसी) ने एक आरोपी का मकान गिरा दिया। अब इस मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर बेंच के समक्ष निगम ने बिना शर्त माफी मांगी है।नगर निगम आयुक्त अभिजीत चौधरी की ओर से दाखिल हलफनामे में कहा गया है कि नगर निगम के टाउन प्लानिंग और स्लम विभाग के अधिकारी नवंबर 2023 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश से अनजान थे। इसी कारणवश फहीम खान का दो मंजिला मकान 24 मार्च को गिरा दिया गया। यह कार्रवाई नगर निगम की अतिक्रमण विरोधी टीम ने स्थानीय पुलिस की सहायता से की थी, जिसकी तुलना उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में हुई बुलडोजर कार्रवाई से की जा रही है।बता दें कि फहीम खान माइनॉरिटीज डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) के प्रमुख हैं। उन्हें 19 मार्च को नागपुर के महल इलाके में हुई सांप्रदायिक हिंसा के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उन पर आगजनी, पथराव और देशद्रोह जैसे गंभीर आरोप हैं। यह हिंसा 17 मार्च की रात तब फैली थी, जब यह अफवाह उड़ी कि खुलदाबाद में औरंगजेब की मजार को हटाने की मांग के बीच एक धार्मिक चादर की बेअदबी हुई है।फहीम खान की मां मेहरुन्निसा और एक अन्य बुजुर्ग अब्दुल हफीज की याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति नितिन साम्ब्रे और न्यायमूर्ति वृषाली जोशी की बेंच ने महाराष्ट्र सरकार को दो सप्ताह का समय दिया है।

जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई होंगे अगले सीजेआई, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की लेंगे जगह

नई दिल्ली (आरएनएस)। वर्तमान मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना ने बुधवार को केंद्रीय कानून मंत्रालय को न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई को अगला सीजेआई नियुक्त करने की सिफारिश भेजी है। न्यायमूर्ति गवई वर्तमान सीजेआई के बाद उच्चतम न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं और वह आगामी 14 मई को देश के 52वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ लेंगे। सीजेआई खन्ना 13 मई को सेवानिवृत्त होने वाले हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जस्टिस गवई को पद की शपथ दिलाएंगी। न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ के 65 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने के बाद न्यायमूर्ति खन्ना ने नवंबर 2024 में मुख्य न्यायाधीश का पदभार संभाला था।जस्टिस गवई का पूरा नाम भूषण रामकृष्ण गवई है और उनका जन्म 24 नवंबर, 1960 को महाराष्ट्र के अमरावती में हुआ था। उन्होंने 12 नवंबर, 2005 को उच्च न्यायालय के स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति प्राप्त की थी। तब से वह शीर्ष अदालत की कई महत्वपूर्ण संविधान पीठों का हिस्सा रहे हैं, जिन्होंने कई ऐतिहासिक फैसले सुनाए हैं।जस्टिस गवई उस पांच न्यायाधीशों की पीठ के सदस्य थे जिसने सर्वसम्मति से केंद्र सरकार के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के फैसले को बरकरार रखा था।

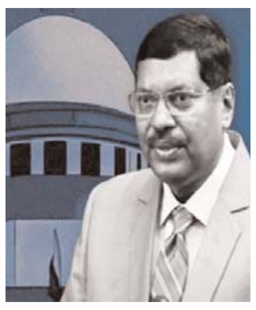

मौलवियों के साथ बैठक: ममता बोलीं- भाजपा बंगाल की सत्ता में आई तो खाना भी बंद कर देगी

कोलकाता ,(आरएनएस)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मुस्लिम मौलवियों के साथ एक बैठक में भाजपा पर राज्य में ध्रुवीकरण करने और उनकी सरकार को गिराने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सत्ता में आने पर मुसलमानों का खाना भी बंद कर देगी और दिल्ली में बंगाली इलाकों में मछली और मांस बंद करने का उदाहरण दिया। ममता बनर्जी ने वक्फ एक्ट में बदलाव को लेकर भी केंद्र सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि भाजपा ने संविधान संशोधन के बजाय चाल चली है। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा, ...क्या अब आपके (भाजपा) पास अकेले बहुमत है? आपके पास नहीं है, फिर भी आप ये सब करते हैं। आज देखिए, चंद्रबाबू नायडू चुपचाप बैठे हैं।

चुनाव आयोग ने पहली बार 'बीएलए' को दिया प्रशिक्षण, बिहार के 280 एजेंट्स शामिल

नई दिल्ली(आरएनएस)। भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने आगामी बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बूथ लेवल एजेंटों (बीएलए) का प्रशिक्षण शुरू कर दिया है। भारत निर्वाचन आयोग ने एक प्रेस नोट जारी कर यह जानकारी दी। ईसीआई की ओर से जारी प्रेस नोट के अनुसार, भारत निर्वाचन आयोग ने बिहार में आगामी विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए पहली बार बूथ लेवल एजेंट्स (बीएलए) के लिए प्रशिक्षण शुरू कर दिया है। नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर डेमोक्रेसी एंड इलेक्शन मैनेजमेंट (आईआईआईडीईएम) में आयोजित इस दो दिवसीय प्रशिक्षण में बिहार के 10 मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों से जुड़े लगभग 280 बीएलए हिस्सा ले रहे हैं।

आखिरकार पकड़ी गई दामाद के साथ भागी सास, बोली अब ये ही मेरा पति, किए कई खुलासे

नई दिल्ली , (आरएनएस)। बेटी की शादी से दस दिन पहले होने वाले दामाद के साथ भागी सास ने आखिरकार सरेंडर कर दिया है। पुलिस ने दोनों के गिरफ्तार कर लिया है।

दामाद के साथ पुलिस के शिकंजे में आई सास थाने में फूट-फूटकर रोने लगी। उसने रोते हुए कई खुलासे किए। सास ने पुलिस को बताया कि उसे क्यों दामाद के ही साथ भागने पर मजबूर होना पड़ा। सास ने यह भी कहा कि वह दामाद से प्यार करती हूं और उसी के साथ अब रहना है। वहीं, दामाद ने बताया कि घर से भागने के बाद पिछले दस दिनों में दोनों कहां-कहां रहे और किस तरह से पुलिस से छिपते रहे। पुलिस ने दोनों को नेपाल बार्डर से गिरफ्तार करने का दावा किया है। हालांकि दामाद ने दावा किया कि वह खुद पुलिस थाने पहुंचे हैं। सास सपना देवी ने कहा कि वह अब अपने पति जितेंद्र के साथ नहीं रहना चाहती है। वह दामाद राहुल के साथ ही रहना चाहती है। दामाद को ही अपना पति मान लिया है। सपना देवी ने बताया कि उसका पति जितेंद्र शराबी है। वह शराब के नशे में उसके साथ मारपीट करता है। जितेंद्र के कारण ही वह घर छोड़कर भागी है। अगर रिश्ता अच्छा होता तो वह क्यों जाती? सास सपना देवी ने बताया कि मेरा दामाद के साथ बात करना पति को पसंद नहीं था। एक बार तो उसने यह तक कह दिया कि तुम राहुल के साथ ही भाग जाओ। अब कोई पति ऐसा लांछन लगाएगा तो पत्नी पर क्या बीतेगी। फिर मैंने ये सब बातें राहुल से बताई।

बैरसिया के खेजड़ा घाट, हथाईखेड़ा डेम और वन विहार तालाब में चला श्रमदान और सफाई अभियान

भोपाल (आरएनएस)। जल गंगा संवर्धन अभियान- 2025 के अंतर्गत भोपाल जिले में जल स्त्रोतों की स्वच्छता और संरक्षण के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों पर जन-सहभागिता आधारित गतिविधियाँ संचालित की गईं। जिला प्रशासन और मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में बैरसिया स्थित खेजड़ा घाट की बाह्य नदी में छात्रों द्वारा साफ-सफाई के साथ बोरी बंधान का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त, हथाईखेड़ा डेम में भी सफाई कार्य संपन्न हुआ। इसी क्रम में वन विहार के समीप स्थित छोटे तालाब में नगर निगम भोपाल के सहयोग से पानी की सतह पर उगी हुई घास को हटाकर तालाब की सफाई की गई। इस श्रमदान कार्यक्रम में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के छात्र, जन अभियान परिषद के जिला एवं विकासखंड समन्वयक तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई। कार्यक्रम का उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना और समुदाय को जल स्त्रोतों की स्वच्छता एवं सतत विकास के लिए प्रेरित करना है। इस दिशा में स्कूल शिक्षा विभाग, भोपाल द्वारा भी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं, जिनमें निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर-बैनर और चित्रकला प्रतियोगिता के माध्यम से स्कूली छात्रों को जल संरक्षण का संदेश देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

अनुसूचित जाति वर्ग स्वरोजगार स्थापित करने शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का ले लाभ

भोपाल (आरएनएस)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित भोपाल ने बताया कि अनुसूचित जाति वर्ग को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए संत रविदास स्वरोजगार योजना, डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना एवं सावित्री बाई फुले स्व-सहायता समूह योजनाएं संचालित की जा रही है।संत रविदास स्वरोजगार योजना में उद्योग स्थापित करने के लिए एक लाख से 50 लाख रूपए तक, एक लाख से 25 लाख रूपए तक सेवा इकाई एवं खुदरा व्यवसाय के लिए 18 से 45 वर्ष आयु एवं न्यूनतम कक्षा 8वीं उत्तीर्ण, परिवार की वार्षिक आय 12 लाख से अधिक नहीं होना चाहिए, बैंक से प्राप्त ऋण पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज अनुदान अधिकतम 7 वर्षों तक दिया जाएगा। आवेदन www.samast.mponline.gov.in पोर्टल पर एमपी ऑनलाइन के माध्यम से कर सकते है। डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना में स्वरोजगार स्थापित करने के लिए 10 हजार से एक लाख रूपए तक का ऋण दिया जाएगा। आयु 18 से 55 वर्ष के मध्य होना चाहिए, शिक्षा का बंधन नहीं है। बैंक से प्राप्त ऋण पर 7 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज अनुदान अधिकतम 5 वर्षों तक दिया जाएगा।

राष्ट्रवीर अमर शहीद तात्या टोपे समाधि स्थल पर लगेगा दो दिवसीय शहीद मेला

मेले के आयोजन को लेकर बैठक हुई आयोजित

भोपाल (आरएनएस)। राष्ट्रवीर अमर शहीद तात्या टोपे के बलिदान दिवस को याद करते हुए समाधि स्थल पर 18 और 19 अप्रैल को दो दिवसीय शहीद मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले के आयोजन को लेकर मंगलवार को बैठक आयोजित की गई। बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष गायत्री शर्मा, पूर्व विधायक प्रहलाद भारती सहित अन्य संबंधितजन एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में कलेक्टर रवींद्र कुमार चौधरी ने कहा कि अमर शहीद तात्या टोपे शहीद मेला शिवपुरी जिले के लिए एक बड़ा आयोजन है जिसे पूर्ण गरिमामयी ढंग से मनाया जाएगा। जिसमें विभिन्न विभागों को भी जिम्मेदारी सौंपी गई है। नगर पालिका शिवपुरी के सीएमओ को कार्यक्रम स्थल पर साफ सफाई एवं अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए हैं।

दो दिवसीय मेले में 18 अप्रैल को प्रात: 8:00 बजे जिला जेल शिवपुरी से प्रभात फेरी निकाली जाएगी, जो शहर के मुख्य मार्गो से होती हुई समाधि स्थल पर पहुंचेगी। प्रात: 9:00 बजे ध्वजारोहण और गार्ड ऑफ ऑनर एवं राष्ट्रगान होगा। इसके बाद श्रद्धांजलि सभा और अस्त्र-शास्त्र एवं चित्रों की प्रदर्शनी का शुभारंभ किया जाएगा। 18 और 19 अप्रैल की शाम को समाधि स्थल पर देशभक्ति पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे। जिसमें कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी जाएगी।

मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन किसानों के समग्र विकास की दिशा में ऐतिहासिक पहल : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

किसानों की आर्थिक समृद्धि के लिए मंत्रिपरिषद ने दी है मिशन को सैद्धांतिक मंजूरी

भोपाल (आरएनएस)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश कृषि आधारित राज्य है और इस क्षेत्र में यहां अपार संभावनाएं हैं। किसानों की आय, कृषि उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन में वृद्धि के साथ-साथ खाद्य प्र-संस्करण और कृषि से उत्पादित कच्चे माल पर आधारित औद्योगिक इकाई स्थापित करने जैसे हर संभव प्रयास जारी हैं। किसानों और गौपालकों की आय बढ़ाने के साथ-साथ कुपोषण दूर करने की दिशा में सरकार योजनाबद्ध तरीके से पूरी ऊर्जा के साथ कार्य कर रही है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण योजनाएं तैयार की जा रही हैं। मध्यप्रदेश में वर्तमान दुग्ध उत्पादन 9 प्रतिशत से बढ़ाकर जल्द से जल्द 20 प्रतिशत तक करने के लिए राज्य सरकार ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना प्रारंभ की है।

इससे हम घर-घर गोकुल तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि हमने गौशालाओं में दुधारू पशुओं के लिए भी अनुदान राशि बढ़ाने का भी निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मीडिया को जारी संदेश में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विकसित भारत @2047 के विजन के अनुरूप हमारी सरकार ने गरीब, युवा, अन्नदाता (किसान) और नारी कल्याण के लिए मिशन शुरू कर दिए हैं। मंत्रि-परिषद की गत दिवस मंगलवार को बैठक में मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन को सैद्धांतिक स्वीकृति दे दी गई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार मध्यप्रदेश को विशेषकर गरीबों औरकिसानों को आर्थिक रूप से सुखी और समृद्ध बनाने के लिए प्राण-प्रण से कार्य कर रही है।

निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों से हटाए अतिक्रमण

भोपाल,(आरएनएस)। नगर निगम द्वारा सड़कों, फुटपाथों, कॉरीडोर व सार्वजनिक स्थलों आदि से अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही निरंतर की जा रही है। इसी तारतम्य में निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने सीएम हेल्पलाईन व अन्य माध्यमों से प्राप्त शिकायतों के निवारण तथा निगम की नियमित कार्यवाही के तहत शहर के अनेक क्षेत्रों से अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही करते हुए ठेले, गुमठी, पान पार्लर, काउंटर, स्टैण्ड बोर्ड, रैक आदि जप्त किए साथ ही भवन अनुज्ञा शाखा को सहयोग देकर अवधपुरी प्रगति नगर क्षेत्र में अवैध रूप से बनीं 04 दुकानों को भी तोड़ने की कार्यवाही की। निगम आयुक्त हरेन्द्र नारायन के निर्देश पर निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते के दलों ने बुधवार को डीआईजी बंगला चौराहा, ईदगाह हिल्स, वाजपेयी नगर, न्यू मार्केट नो व्हीकल जोन, सूरज नगर, भदभदा, बड़वई, करोद, बुधवारा, कसाईपुरा, ज्योति टॉकीज, अवधपुरी, प्रगति नगर, व्हीआईपी गेस्ट हाउस, लिंक रोड नं. 01, 02 एवं 03, अशोका गार्डन, 80 फिट रोड, सब्जी मंडी परिहार चौराहा, कोलार क्षेत्र के फाईन एवेन्यू, बीमाकुंज, कोलार थाना, संस्कार गार्डन, मिसरोद, अलकापुरी, भानपुर, रेतघाट, दानापानी रोड, ईश्वर नगर, अरेरा हिल्स, एम.पी.नगर आदि क्षेत्रों में सड़कों, फुटपाथों व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर अवैध रूप रखे ठेले, गुमठियां, गन्ने की चरखी, झुग्गी, काउंटर आदि के अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही करते हुए 04 काउंटर, 01 स्टैण्ड बोर्ड, 02 रैक, 02 कूलर स्टैण्ड, 04 गुमठी, 03 टेबिल, 05 बैंच, 01 पान पार्लर आदि जप्त किए।

भाजपा द्वारा ईडी का दुरुपयोग राजनैतिक एजेंडा, देश में अघोषित आपालकाल का संकेत- जीतू पटवारी

-अभा कांग्रेस के निर्देश पर प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों, सरकारी दफ्तरों के सामने कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

भोपाल (ए.)। ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर अभा कांग्रेस की पूर्व अध्यक्षा, त्याग की प्रतिमूर्ति श्रीमती सोनिया गांधी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ कोर्ट में चार्ज शीट दायर

किये जाने के विरोध में आज देश भर में कांग्रेस पार्टी ने भाजपा सरकार और ईडी के खिलाफ प्रदर्शन कर विरोध दर्ज कराया। वहीं अभा कांग्रेस के निर्देश पर मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी के निर्देश पर सभी जिलों में जिला मुख्यालयों व बड़े सरकारी दफ्तरों पर कांग्रेस ने ईडी द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर की गई कार्यवाही के विरोध में प्रदर्शन कर मोदी सरकार को घेरा। श्री पटवारी ने इस मामले को लेकर मीडिया से चर्चा कर मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के नेतृत्व में बुधवार को भोपाल जिला शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना और ग्रामीण अध्यक्ष अनोखी मानसिंह पटेल के तत्वावधान में ईडी द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले पर चार्ज शीट दायर किये जाने पर मोदी सरकार की तानाशाही, भाजपा सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर भाजपा की कुत्सित मानसिकता के खिलाफ विरोध दर्ज कराया गया। विरोध प्रदर्शन में बड़ी संख्या में कांग्रेसजनों ने हाथों में तखतियां लेकर ईडी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।श्री पटवारी ने कहा कि भाजपा नेशनल हेराल्ड को लेकर पिछले 5 साल से माहौल बना रही है और विपक्ष को दबाने की साजिश रच रही है।

आयुष्मान आरोग्य शिविरों में 12 हजार से अधिक नागरिक लाभान्वित

भोपाल(आरएनएस)।भोपाल जिले के 130 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आरोग्य शिविर आयोजित किए गए। शहरी स्वास्थ्य संस्थाओं, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप स्वास्थ्य केंद्रों, मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक्स में आयोजित शिविरों में 12856 हितग्राही स्वास्थ्य विभाग द्वारा दी जा रही विभिन्न सेवाओं से लाभान्वित हुए। शिविरों में संचारी एवं असंचारी रोगों की स्क्रीनिंग, टीकाकरण, परिवार कल्याण सेवाएं, आयुष सेवाएं, टेली कंसल्टेशन, टीकाकरण बैलेंस गतिविधियां सहित विभिन्न स्वास्थ्य दी गईं। साथ ही नागरिकों को लू और अधिक तापमान से होने वाली बीमारियों के बचाव के बारे में जानकारी भी दी गई। शिविरों में के लिए 4781 की उच्च रक्तचाप एवं 4150 नागरिकों की मधुमेह स्क्रीनिंग की गई। 2908 लोगों की ओरल कैंसर,1552 की स्तन कैंसर एवं 913 की सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग की गई। क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत 588 टीबी स्क्रीनिंग की गई। 618 हितग्राहियों की मोतियाबिंद जांच एवं 282 की कुष्ठ रोग जांच की गई। 400 से अधिक गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं का टीकाकरण किया गया। शिविरों में 149 हितग्राहियों को टेली कंसल्टेशन सेवाएं भी दी गईं। 3755 हितग्राहियों को योग, भोजन एवं जीवन शैली सम्बन्धी परामर्श दिया गया। स्वास्थ्य मेलों के आयोजन के दौरान आम नागरिकों के साथ-साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों, जन आरोग्य समिति के सदस्यों एवं महिला आरोग्य समिति के सदस्यों को भी शामिल किया गया।मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आयोजित शिविरों को स्वास्थ्य परीक्षण तक ही सीमित नहीं रखा गया है , बल्कि इनके माध्यम से नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी किया जा रहा है। योग, उचित खानपान स्वस्थ जीवनशैली के लिए वैलनेस गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

दूसरी बस के ओवरटेक से बचने के प्रयास में डिवाइडर पर चढ़कर पलटी कर्मचारियो से भरी बस

- बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने हुआ हादसा

-15 घायल, चार गंभीर, एक की हालत चिंताजनक

भोपाल(ए)। राजधानी के नजदीक बागसेवनिया थाना इलाके में भोपाल-नर्मदापुरम रोड पर बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने बुधवार दोपहर बड़ा हादसा हो गया। यहॉ सोम डिस्टिलरीज के कर्मचारियो को ले जा रही बस डिवाइडर से टकराकर पलट गई।

एक्सीडेंट में बस में सवार ड्राइवर-कंडक्टर सहित सोम डिस्टिलरीज के करीब 15 कर्मचारी घायल हो गए। इनमें चार की हालत गंभीर और एक की हालत चितांजन बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार बीयू के सामने एक बस अचानक अनयित्रिंत होकर डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। बताया गया है कि बस कर्मचारियों को लेकर मंडीदीप की ओर जा रही थी। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस टीम ने मौके पर मौजूद लोगो के साथ मिलकर घायलों को इलाज के लिये नजदीक ही स्थित निजी अस्पताल पहुंचाया। हादसे में बस चालक हेमंत के साथ ही मनोज यादव और अनिल मीणा नामक व्यक्ति गंभीर रुप से घायल हुए है, जिनकी हालत चिंताजनक है। वहीं वीडी शुक्ला नाम के एक व्यक्ति की हालत नाजूक बताई जा रही है। लोगो का कहना है की हादसे का शिकार हुई बस सोम डिस्टिलरीज के कर्मचारियों को लेकर जा रही थी।

एमपी ट्रांसको ने मानव जीवन के लिए घातक अनाधिकृत निर्माण तोड़े

भोपाल (आरएनएस)। मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांस्को) की एक्स्ट्रा हाईटेंशन लाइन के समीप के उस निर्माण को आज एमपी ट्रांसको के अधिकारियों की उपस्थिति में तोड़ा गया जिसके कारण कुछ दिन पूर्व शारदा नगर ,नारियल खेड़ा, भोपाल से गुजर रही 132 के व्ही भोपाल-लालघाटी एक्स्ट्रा हाई टेंशन लाइन के संपर्क में आने के कारण दो रहवासी गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

मकान में शेड लगाने के दौरान हुआ था हादसा

एम.पी. ट्रांसको के भोपाल में अतिरिक्त मुख्य अभियंता एस. के. दुबे ने बताया कि विगत 12 अप्रैल को शारदा नगर, नारियल खेड़ा, भोपाल क्षेत्र में 132 केवी भोपाल-लालघाटी एक्स्ट्रा हाई टेंशन लाइन में ट्रिपिंग आई थी। इससे संबंधित लाइन में 9 मिनिट का व्यवधान रहा। लाइन पेट्रोलिंग करने पर यह संज्ञान में आया कि उक्त क्षेत्र से जा रही एक्स्ट्रा हाईटेंशन लाइन के बिल्कुल समीप एक मकान में सीमेंट की चादर का शेड लगाने के दरम्यांन यह हादसा हुआ, जिसमें दो व्यक्ति फरहान खान एवं गुडडू खान इस एक्सट्रा हाईटेंशन लाइन के इंडक्शंन जोन में आने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इसके बाद क्षेत्र में मानव जीवन को सुरक्षित रखने के लिए एम.पी. ट्रांसको द्वारा यह कार्रवाई की गई।

इन निर्माणों को तोड़ा गया

एम.पी. ट्रांसको द्वारा की गई कार्रवाई में गुडडू खान मकान नंबर 470, खलील खान मकान नंबर 448 एवं नसीम खान मकान नंबर 361 के शारदा नगर, नारियल खेड़ा स्थित आवासों के अनाधिकृत एवं मानव जीवन के लिए घातक निर्माणों को तोड़ा गया।

भोपाल में दिये गये 900 नोटिस

एसीई श्री दुबे ने बताया कि भोपाल में ऐसे लगभग 275 स्थान चिन्हित किए गए हैं, जहां किए गए निर्माण मानव जीवन के लिए घातक और असुरक्षित है। यहाँ अनाधिकृत निर्माण पाया गया है, उनके भवन मालिकों को करीब 900 नोटिस विगत वर्षों में जारी किये गए हैं। हादसों के लिए अति संवेदनशील इन क्षेत्रों के मकान मालिकों को पूर्व में भी नोटिस जारी किये गए हैं। अब उन्हें पुन: नोटिस देने के साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी समझाइश दी जा रही है।

संवेदनशील क्षेत्र

भोपाल में मानव जीवन के लिए घातक और संवेदनशील एकस्ट्रा हाईटेंशन लाइन के समीप जहां निर्माण हुए हैं उनमें गोविंदपुरा इंड्रस्टियल एरिया, करौंद, रतनपुरा कॉलोनी, देवकीनगर, लालघाटी, नारियल खेड़ा, जैन कॉलोनी, आनंद नगर, मारूति सुजुकी पेंटिग फैक्ट्री, साईनाथ इंटरप्राईजेस, विश्वकर्मा नगर शिव नगर, बैरागढ़, रतन कालोनी शारदा नगर के क्षेत्र शामिल हैं।

कार्रवाई में ये रहे शामिल

अनाधिकृत निर्माण को तोड़ने की कार्रवाई में एमपी ट्रांसको के कार्यपालन अभियंता रवि चौरसिया, सहायक अभियंता अंकित महरोलिया, वरिष्ठ लाइन मैन स्टाफ पूनाजी गलफाट, राम प्रीत, आउटसोर्स कर्मी सतीश और राजेन्द्र भारती सहित अन्य शामिल रहे, जिन्होने पूरी सजगता और सतर्कता से मानव जीवन के लिए घातक इन निर्माणों को तुड़वाकर उनका जीवन सुरक्षित किया।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने मंत्रालय में विभागीय अधिकारियों के साथ पिछड़ा वर्ग कल्याण, विमुक्त,घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु विभाग की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की

आपदा प्रबंधन की तैयारियों को परखने रासायनिक औद्योगिक आपदा पर मॉक अभ्यास का आयोजन आज

भोपाल (आरएनएस)।भारत सरकार के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) और जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) के संयुक्त तत्वाधान में 17 अप्रैल 2025 को प्रात: 09:30 से दोपहर 01:30 बजे तक सेंट्रल पॉवर रिसर्च इंस्टीट्यूट के सामने, रासायनिक औद्योगिक आपदा पर मॉक अभ्यास का आयोजन किया जाएगा। यह अभ्यास आपदा प्रबंधन की तैयारियों को परखने तथा जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। डिप्टी कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी लाखन सिंह चौधरी ने बताया कि 17 अप्रैल 2025 को भोपाल सहित प्रदेश के 10 जिलों में रासायनिक औद्योगिक आपदा पर आधारित मॉक अभ्यास आयोजित किया जाएगा, इस संदर्भ में आम जनता में जागरूकता फैलाने एवं किसी भी प्रकार की घबराहट से बचाव के लिये पूर्व सूचना देना अत्यंत आवश्यक है. यह केवल एक प्रशिक्षण प्रक्रिया है, और आम नागरिकों को घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जिले के आम नागरिकों से अपील है कि अभ्यास के दौरान शांति बनाए रखें, किसी भी प्रकार की घबराहट से बचें, मॉक अभ्यास क्षेत्र में प्रशासन के निर्देशों का पालन करें, अफवाहों से बचें और दूसरों को सही जानकारी प्रदान करें. यदि किसी भी असुविधा का अनुभव हो, तो तुरंत निकटतम प्रशासनिक अधिकारियों को सूचित करें।

गिद्ध संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन सेंटर केरवा भोपाल के 6 केप्टिव ब्रीडिंग गिद्धों को छोड़ा गया प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में

भोपाल (ए.)। वन विभाग द्वारा गिद्ध संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गयी है। लुप्तप्राय गिद्ध प्रजातियों को बचाने और उनके संरक्षण के लिये गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन सेंटर केरवा भोपाल के 6 केप्टिव ब्रीडिंग गिद्धों को प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में छोड़ा गया। इनमें 2 सफेद पीठ वाले गिद्ध एवं 4 लम्बी चोंच वाले गिद्धों को मुक्त किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव शुभरंजन सेन ने बताया कि मुक्त किये गये सभी गिद्धों पर ऑर्निट्रैक-25 सौर ऊर्जा चलित जीपीएस-जीएसएम ट्रैकर लगाये गये हैं। इसके माध्यम से उनके आवागमन के पैटर्न और आवास उपयोग की निगरानी की जा रही है। श्री सेन ने बताया कि डायरेक्टर टेक फॉर कंजर्वेशन जी. अरेन्द्रन, विश्व प्रकृति निधि भारत द्वारा गिद्धों को ऑर्निट्रैक-25 सौर ऊर्जा चलित जीपीएस-जीएसएम ट्रैकर लगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री सेन ने कहा कि हलाली डेम के आसपास की बस्तियों में टैग किये गये गिद्धों की सुरक्षा एवं जागरूकता के लिये पर्चे बाँटे गये हैं। इनमें आम लोगों से अपील की गयी है कि अगर गिद्ध घायल होते हैं या उन्हें कोई नुकसान पहुँचता है, तो वे तत्काल वन विभाग को सूचित करें। गिद्धों के पहले समूह को प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में छोड़ने के अवसर पर अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव एल. कृष्णमूर्ति, संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान श्री मीना अवधेश कुमार शिव कुमार, सहायक संचालक वन विहार संदेश माहेश्वरी, बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी मुम्बई के प्रतिनिधि, उप संचालक डॉ. सुजीत नरवड़े, डॉ. सरवन सिंह राठौर, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, डॉ. सेमसन, गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन केन्द्र केरवा भोपाल संजय परिहार, विश्व प्रकृति निधि भारत की प्रतिनिधि श्रीमती संगीता सक्सेना, अजय मिश्रा और रायसेन वन मण्डल के अधिकारी उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटनायें रोकने के लिये ग्राम पंचायतों ने सड़कों के किनारे लगाए रेडियम शाइन बोर्ड

ग्वालियर (आरएनएस)। जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य मार्गों के नजदीक बसीं ग्राम पंचायतों के क्षेत्र में सड़क दुर्घटनायें रोकने के लिये संबंधित ग्राम पंचायतों द्वारा सड़क के दोनों ओर रेडियम शाइन बोर्ड लगाए गए हैं। जिले में 88 ग्राम पंचायतें मुख्य सड़क मार्गों पर स्थित हैं। इन सभी पंचायतों द्वारा शाइन बोर्ड लगाए जा चुके हैं।

आबकारी विभाग की अवैध शराब के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई

-आबकारी अधिनियम के तहत 02 आरोपी को जेल भेजा गया

जबलपुर (आरएनएस)। कलेक्टर श्री दीपक सक्सेना के निर्देशन में मदिरा के अवैध निर्माण, विक्रय, संग्रहण एवं परिवहन पर विशेष सतर्कता एवं कठोरता से प्रभावी अंकुश लगाये जाने के लिए प्रभावी कार्यवाही की गई। सहायक आबकारी आयुक्त संजीव कुमार दुबे एवं जिला उड़नदस्ता तथा कंट्रोल रूम प्रभारी परमानंद कोरचे के नेतृत्व में वृत्त शहपुरा उत्तर में थाना कटंगी अंतर्गत बेलखाड़ू करारी मार्ग पर एक टाटा सफारी कार क्र. MP20CD4787 से अवैध मदिरा परिवहन करते हुए 324 बल्क लीटर देशी मदिरा जब्त किया गया। जब्त मदिरा एवं वाहन का कुल अनुमानित मूल्य 13 लाख रूपये हैं। जिसमे आरोपी प्रमोद कुमार जायसवाल को आबकारी अधिनियम की धारा 34(1)(क) एवं 34 (2) के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया एवं फरार वाहन चालक की पतासाजी जारी हैं। साथ ही प्रशिक्षु आबकारी उपनिरीक्षक सुश्री रुपाली जैन के नेतृत्व में वृत्त-शहपुरा दक्षिण (ब) के ग्राम-घाना, थाना-तिलवारा जबलपुर में अवैध मदिरा के संग्रहण की सूचना पर अमर मल्लाह पिता-स्वर्गीय छोटे लाल मल्लाह के आवास पर दबिश दी गई7 तलाशी के दौरान उक्त मकान से 240 पाव (43.2ब्ब्) देशी मदिरा प्लेन, एवं 30 लीटर हाथ भट्टी कच्ची शराब कुल 73.2 लीटर अवैध मदिरा बरामद कर कब्जे आबकारी ली गई। कार्यवाही में जप्त मदिरा का अनुमानित मूल्य लगभग 22 हजार 500 रूपये है। आरोपी के विरुद्ध म. प्र. आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34 (1) (क) व 34 (2) के तहत आपराधिक प्रकरण पंजीबद्ध कर आरोपी को मौके पर ही गिरफ्तार किया गया। कार्यवाही के दौरान श्वेता सिंह आबकारी उप निरीक्षक, रमेश कुशराम प्रधान आरक्षक, आरक्षक दीपचंद राय, राकेश जादौन, अनुराग शर्मा उपस्थित रहे।

बंधुआ श्रम जिला स्तरीय सतर्कता समिति एवं बाल श्रम से संबंधित जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित

झाबुआ (आरएनएस)। कलेक्टर नेहा मीना की अध्यक्षता में बंधुआ मजदूर प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 के अंतर्गत श्रमिकों के पहचान, सत्यापन विमुक्ति और पुनर्वासन हेतु गठित जिला स्तरीय निगरानी समिति एवं बाल श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 तथा बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) 2016 के प्रावधानों के तहत जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में श्रम निरीक्षक संजय बघेल द्वारा बंधुआ मजदुर एवं बाल श्रमिक से जुड़े विभिन्न प्रावधानों की जानकारी दी गई। बैठक में सतर्कता समिति के बंधुआ मजदूरो के सम्बन्ध में जिम्मेदारियों से अवगत करा कर बताया कि बंधुआ मजदूरों के बचाने के लिए अपनायी जाने वाली प्रक्रिया के सम्बन्ध में विस्तार से बताया गया। बैठक में बाल एवं किशोर श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधि. 1986 एवं संशोधन 2016 के प्रावधानों के तहत अवगत कराया गया कि जिले में पिछले वित्तीय वर्ष में 92 निरीक्षण किये जाकर 6 बाल श्रमिको को रेस्क्यू किया गया एवं 05 उल्लंघनकर्ता संस्थानों के विरुद्ध सीजेएम (CJM) न्यायालय मे अभियोजन दायर किया गया है। बैठक में कलेक्टर नेहा मीना ने निर्देशित किया कि पिछले 2 वर्षों में श्रमिकों के अधिकारों सम्बन्धी समस्याओं के प्रकरणों का संकलन कर भविष्य की कार्ययोजना हेतु प्रस्ताव बना कर जिला प्रशासन के माध्यम से विभाग को भेजा जाए जिससे इस प्रकार के प्रकरणों से सम्बन्धी हेल्पलाइन नम्बर एवं मजदूरों की सुरक्षा हेतु कोई पहल की जा सकी। इसी के साथ कलेक्टर ने कहा कि प्रत्येक थाना स्तर पर मजदूरों की सूची एवं कॉन्ट्रेक्टर्स की सूची का संकलन किये जाने हेतु एडवाइजरी जारी करने के निर्देश दिये।

सरवन में देवरण्य योजना अंतर्गत ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

रतलाम, (आरएनएस)। राज्य औषधिय पादप बोर्ड भोपाल के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर राजेश बाथम के मार्गदर्शन में सैलाना ब्लॉक के ग्राम सारवन में देवरण्य योजना के अंतर्गत एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को तुलसी की पुनर्योजी खेती, उसकी उद्यानिकी महत्वता, और योजना से जुड़ी विभिन्न तकनीकी जानकारियां देना रहा।

कार्यक्रम में सॉलिडरिडाड संस्था से बलराम खराड़ी ने किसानों को पुनर्योजी (रिजेनेरेटिव) खेती के सिद्धांतों की जानकारी दी और विशेष रूप से तुलसी की जैविक खेती में मिट्टी के स्वास्थ्य और संरक्षण के महत्व को समझाया। उद्यानिकी विभाग से अखिलेश पाटीदार ने तुलसी के उद्यानिक पहलुओं जैसे रोपण समय, पौध प्रबंधन, जल प्रबंधन और भंडारण आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला।डॉ. आशीष राठौर, जिला आयुष अधिकारी ने किसानों को देवरण्य योजना की रूपरेखा, उद्देश्य, तथा एक जिला एक उत्पाद के तहत तुलसी के चयन के पीछे की सोच से अवगत कराया। उन्होंने किसानों को तुलसी की विभिन्न किस्मों जैसे औषधि तुलसी तथा सुगंधित तुलसी आदि की खेती के लिए आवश्यक मिट्टी का Ph, रोपण , भंडारण, प्राथमिक प्रसंस्करण आदि के बारे में जानकारी किसानों से साझा की तथा किसानों से आग्रह किया कि वे इस योजना से जुड़कर औषधीय फसलों की ओर कदम बढ़ाएं। आत्मा विभाग से तकनीकी प्रबंधक अनिल कुमार द्वारा किसानों को नवीन कृषि योजनाओं की जानकारी दी गई, साथ ही तकनीकी सहायता एवं लाभ लेने की प्रक्रिया को भी समझाया गया।ग्राम सरवन के किसानों ने प्रशिक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाई और तुलसी की खेती को एक नवाचारी और लाभकारी आजीविका विकल्प के रूप में अपनाने की रुचि जताई।

किसान भाई उर्वरकों का अग्रिम भण्डारण करें

रतलाम, (आरएनएस)। प्रदेश शासन द्वारा किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्रालय द्वारा अग्रिम भण्डारण की योजना लागू की गई है। उक्त योजना 31 मई तक लागू रहेगी। किसान भाई आवश्यकतानुसार रासायनिक उर्वरकों का अग्रिमण भण्डारण करें। उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास श्रीमती नीलमसिंह चौहान ने बताया कि वर्तमान में यूरिया 6294, डीएपी 1492, पोटाश 1257 तथा काम्पलेक्स 6425 मैट्रिक टन रासायनक खाद का मात्र जिले में भण्डारण है। खरीफ वर्ष 2025 में किसानों को रासायनिक उर्वरकों की अत्यधिक आवश्यकता होगी। किसान भाई योजना का लाभ लेते हुए अग्रिम भण्डारण कर लें, ताकि किसी भी परेशानी का सामना न करना पडे।

आप ने मनाई बाबा साहेब की जयंती

नीमच (आरएनएस)। आज संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर जी का जन्मोत्सव आम आदमी पार्टी ने अम्बेडकर सर्कल पर स्थित बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मनाई / इस अवसर पर आम आदमी पार्टी ने प्रादेशिक नेतृत्व के निर्देश पर पर संविधान की उद्देशिका का वाचन कर संविधान की रक्षा का संकल्प लिया। आप के प्रदेश प्रवक्ता इंजी नवीन कुमार अग्रवाल ने बाबा साहेब की जयंती पर कहा की एक और बाबा साहेब ने विभिन्नता वाले देश में जहां पग पग पर भाषा ,संस्कृति, रीति रिवाज, मजहब, जात पात अलग अलग है ऐसे विभिन्नता वाले देश में संविधान निर्माण का अद्वितीय कार्य बाबा साहेब ने किया है जो वंदनीय है लेकिन वर्तमान समय में तानाशाही सरकार द्वारा खुलेआम संविधान के विपरीत अनेक कार्य किये जा रहे है जो निंदनीय है।

इंदौर में बढ़ती कुत्तों की समस्या पर नगर निगम सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर दाखिल करेगा रिव्यू पिटिशन

-महापौर ने कुत्तों की नसबंदी अभियान की प्रगति की ली जानकारी

इंदौर (आरएनएस)। देश के सबसे स्वच्छ शहर के रूप में ख्यातिप्राप्त इंदौर अब आवारा कुत्तों की समस्या को लेकर गंभीर कदम उठाने जा रहा है। बढ़ती डॉग बाइट की घटनाओं को देखते हुए महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने आज स्मार्ट सिटी कार्यालय में निगम अधिकारियों के साथ बैठक कर इस मुद्दे पर चर्चा की और समाधान के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए।बैठक में निगम आयुक्त शिवम वर्मा अपर आयुक्त अभिलाष मिश्रा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।बैठक के दौरान महापौर ने कुत्तों की नसबंदी अभियान की प्रगति रिपोर्ट ली और कहा कि यह समस्या केवल इंदौर की नहीं, पूरे देश के कई शहरों की है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में इस विषय को लेकर पहले से कई याचिकाएं लंबित हैं, ऐसे में नगर निगम इंदौर को भी तथ्यात्मक और मजबूत आधार के साथ रिव्यू दायर करनी चाहिए, ताकि राष्ट्रीय स्तर पर इस मुद्दे का स्थायी समाधान निकल सके।अधिकारियों ने जानकारी दी कि वर्तमान में इंदौर में लगभग तीस हजार कुत्तों की नसबंदी बाक़ी है शेष कुत्तो की नसबंदी का कार्य पूर्ण किया जा चुका है ।

महापौर ने नसबंदी के साथ-साथ जनजागरूकता अभियान चलाने और संवेदनशील इलाकों में विशेष निगरानी की व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए।महापौर ने कहा कि इंदौर की जनभागीदारी पूरे देश के लिए मिसाल है। हम सभी को मिलकर इस समस्या का समाधान ढूंढना होगा ताकि नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। इंदौर नगर निगम का यह कदम न केवल शहरवासियों के लिए राहत लेकर आएगा, बल्कि अन्य शहरों के लिए भी एक मॉडल प्रस्तुत करेगा।

व्यापार समाचार

फास्ट टैग सिस्टम खत्म! 15 दिन बाद लागू हो रही नई पॉलिसी, सीधे बैंक खाते से कट जाएगा टोल

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश के टोल बूथ को लेकर सरकार जल्द ही एक बड़ा बदलाव करने वाली है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की है कि देश के राजमार्गों पर टोल भुगतान का तरीका बदलने जा रहा है। सरकार अगले 15 दिनों के भीतर एक नई टोल पॉलिसी पेश करने की तैयारी में है, जिसके मई से लागू होने की संभावना है। हालांकि, मंत्री ने इस नई नीति के बारे में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है, लेकिन उन्होंने संकेत दिया है कि इसके लागू होने के बाद टोल को लेकर किसी को भी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। इस नई प्रणाली के आने से मौजूदा फास्टटैग सिस्टम भी पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

गडकरी ने स्पष्ट किया कि नई प्रणाली के तहत फिजिकल टोल बूथ की आवश्यकता नहीं होगी। इसके बजाय, सैटेलाइट आधारित ट्रैकिंग और वाहनों की नंबर प्लेट की पहचान तकनीक का उपयोग किया जाएगा। इसके माध्यम से टोल की राशि सीधे वाहन मालिकों के बैंक खातों से स्वचालित रूप से कट जाएगी।

क्या है नया GPS आधारित टोलिंग सिस्टम?

देश में सड़कों के बढ़ते जाल के साथ टोल बूथों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। सरकार अब इन टोल बूथों को समाप्त कर GPS आधारित टोलिंग प्रणाली को बढ़ावा देने जा रही है, जो वर्तमान FASTag सिस्टम की जगह लेगी। टोल बूथों के निर्माण से आधारभूत संरचना की लागत काफी बढ़ जाती है, जिससे टोल संग्रह की लागत में भी इजाफा होता है। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए सरकार यह नई टोलिंग प्रणाली लाने जा रही है।

इस नई प्रणाली में GPS तकनीक की मदद से सीधे वाहन चालक या मालिक के बैंक खाते से टोल की राशि काटी जाएगी। वाहनों की निगरानी GPS के माध्यम से की जाएगी और तय की गई दूरी और समय के आधार पर टोल की राशि की गणना की जाएगी। सरकार का मानना है कि यह नई प्रणाली टोल संग्रह को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाएगी, साथ ही यात्रियों के लिए भी यह काफी सुविधाजनक साबित होगी।

रुपया बढ़त के साथ बंद

मुंबई (ए)। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया 14 पैसे की बढ़त के साथ ही 85.63 पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह रुपया 85.64 पर खुला। वहीं गत दिवस रुपया 33 पैसे की गिरावट के साथ ही 85.77 रुपये पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि विदेशी पूंजी की निकासी के बावजूद कमजोर अमेरिकी मुद्रा ने स्थानीय मुद्रा को बल दिया। उन्होंने रुपये की मजबूती का श्रेय अमेरिकी प्रशासन के भारत पर अतिरिक्त 26 फीसदी शुल्क को नौ जुलाई तक टालने को भी दिया।अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 85.85 प्रति डॉलर पर मजबूती के साथ खुला और शुरुआती कारोबार में 85.71 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से 39 पैसे की बढ़त दिखाता है। रुपया शुक्रवार को 58 पैसे की जोरदार बढ़त के साथ ही 86.10 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। आंबेडकर जयंती के अवसर पर सोमवार को विदेशी मुद्रा बाजार बंद थे। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 फीसदी उछला लेकिन 100 से नीचे 99.46 पर ही रहा।

सोने ने लगाई छलांग 95 हजार पर पहुंचा, चांदी की चमक भी बरकरार

फिजिकल गोल्ड रखना सुरक्षित तरीका, अब लोग डिजिटल गोल्ड की तरह कर रहे मूव

नई दिल्ली, (ए)। बुधवार को सोने के भाव ने घरेलू वायदा बाजार में पहली बार 95,000 का आंकड़ा पार किया। यह अब तक का इसका सबसे ऊंचा भाव है। सोना 95,090 रुपए प्रति 10 ग्राम के नए टॉप पर पहुंच गया

और बाद में कुछ गिरावट के बाद 95,000 पर कारोबार हुआ। बुधवार दोपहर तक सोने की कीमत में 1.66 फीसदी की बढ़ोरती देखने को मिली। चांदी ने भी वायदा बाजार में अच्छी बढ़त दर्ज की, इसकी कीमतें 1.56 फीसदी बढ़कर एमसीएक्स पर 96,253 रुपए प्रति किलो हो गईं। इसने दिन के भीतर 96,344 रुपए प्रति किलो का उच्चतम स्तर भी छुआ।कीमतों में यह उछाल कमजोर डॉलर और ट्रंप के टैरिफ वॉर के बीच जारी अनिश्चितता के चलते आई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने की कीमतें गिरते डॉलर, व्यापार को लेकर बने तनाव और वैश्विक आर्थिक वृद्धि को लेकर चिंताओं से रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गईं। स्पॉट गोल्ड 1.7 फीसदी बढ़कर अंतरराष्ट्रीय बाजार में 3,282.88 डॉलर प्रति औंस पर पहुंचा, जो पहले 3,290.1 डॉलर प्रति औंस के नए उच्च स्तर पर था। अमेरिकी गोल्ड फ्यूचर्स 1.8 फीसदी बढ़कर 3,299.60 डॉलर पर पहुंच गया।डॉलर इंडेक्स अपने प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले 0.5 फीसदी गिर गया, जिससे अन्य करेंसी होल्डर्स के लिए सोना ज्यादा आकर्षक हो गया। पारंपरिक रूप से सोने को भू-राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितताओं के समय सुरक्षित निवेश माना जाता है और इस साल इसने कई रिकॉर्ड को छुआ, जिससे इसकी कीमत में 25 फीसदी से ज्यादा बढ़ी।

गुड न्यूज : अब चलती ट्रेन में भी यात्री निकाल सकेंगे पैसे, रेलवे ने शुरु की एटीएम सुविधा

नई दिल्ली (आरएनएस)। अक्सर लंबी दूरी की यात्रा के दौरान नकदी की कमी महसूस होती है। यात्रियों की इसी परेशानी को ध्यान में रखते हुए भारतीय

रेलवे ने एक अनूठी पहल की है। अब ट्रेन में सफर करने वाले यात्री भी आसानी से ्र्रञ्जरू से पैसे निकाल सकेंगे। रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए चलती ट्रेन में ्र्रञ्जरू सेवा शुरू करने की तैयारी कर ली है और फिलहाल इसका ट्रायल किया जा रहा है।रेलवे ने इस सुविधा को प्रायोगिक तौर पर नांदेड़ से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस तक चलने वाली पंचवटी एक्सप्रेस में शुरू किया है। इस ट्रेन में एक एटीएम मशीन लगाई गई है, जिससे यात्री अपनी यात्रा के दौरान ही नकदी निकाल सकेंगे।यह नई सुविधा उन यात्रियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद साबित होगी जो ऑनलाइन भुगतान के बजाय नकद में लेनदेन करते हैं। साथ ही, उन लोगों को भी राहत मिलेगी जिन्हें ट्रेन में ऑनलाइन पेमेंट की सुविधा न होने या नकदी खत्म हो जाने के कारण असुविधा होती थी। अब उन्हें जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसे निकालने के लिए स्टेशन का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। रेलवे अधिकारी इस ट्रायल के दौरान यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि चलती ट्रेन में ्र्रञ्जरू मशीन सुचारू रूप से काम करे। नेटवर्क कनेक्टिविटी, सुरक्षा, गोपनीयता, यात्रियों की सुविधा और अन्य आवश्यक पहलुओं पर बारीकी से ध्यान दिया जा रहा है।

ब्रिजस्टोन इंडिया ईवी-रेडी टायरों के साथ बाजार विस्तार की तैयारी में

नईदिल्ली (आरएनएस)। ब्रिजस्टोन इंडिया, यात्री और वाणिज्यिक वाहनों के लिए टायर निर्माता कंपनी, अपनी ट्यूरांज़ा i और ड्यूलर ऑल टेरेन (A/T) 002 टायर श्रृंखला का विस्तार करने के लिए तैयार है। कंपनी विभिन्न वाहनों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इन लोकप्रिय श्रेणियों में नए आकार पेश करेगी।

कंपनी के कार्यकारी निदेशक राजर्षि मोइत्रा के अनुसार, ट्यूरांज़ा 6i टायर एसयूवी, सीयूवी, सेडान और हैचबैक जैसे वाहनों के लिए डिज़ाइन किया गया है और वर्तमान में 14 से 20 इंच के आकार में उपलब्ध है। वहीं, ड्यूलर A/T 002 विशेष रूप से 4X4 वाहनों के लिए बनाया गया है।

मोइत्रा ने बताया कि कंपनी ने पिछले साल इन श्रेणियों में कुछ आकार लॉन्च किए थे और अब 2025 में मई से अक्टूबर के बीच कई नए विकल्प पेश किए जाएंगे। भारतीय टायर बाजार लगभग 4.4 करोड़ यूनिट का है, जिसमें ओईएम (ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर) खंड में 2 करोड़ यूनिट और आफ्टरमार्केट खंड में 2.4 करोड़ यूनिट शामिल हैं। ब्रिजस्टोन इंडिया का आफ्टरमार्केट खंड में 20% बाजार हिस्सेदारी का दावा है और यह मारुति सुजुकी, हुंडई, टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसे प्रमुख कार निर्माताओं के साथ काम करती है।

अमेरिका से तनातनी बढ़ी : चीन ने बोइंग विमानों की डिलीवरी रोकी, एयरलाइनों को नए विमान न खरीदने के निर्देश

नई दिल्ली (आरएनएस)। अमेरिका और चीन के बीच गहराते व्यापारिक तनाव का असर अब विमानन उद्योग पर भी दिखने लगा है। चीन ने अमेरिकी विमान निर्माता कंपनी बोइंग से नए विमानों की डिलीवरी लेने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इसके साथ ही, चीनी सरकार ने अपनी सभी एयरलाइनों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे अब बोइंग से न तो कोई नया विमान खरीदें और न ही अमेरिका से विमानों से जुड़े उपकरण या कलपुर्जे मंगाएं।

यह कड़ा कदम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीनी आयातों पर 145 प्रतिशत तक का भारी टैरिफ लगाने के फैसले के बाद उठाया गया है। इस टैरिफ वॉर के जवाब में चीन ने भी अमेरिकी उत्पादों पर 125 प्रतिशत तक का जवाबी शुल्क लगाने की घोषणा की थी। इन नए शुल्कों के कारण अमेरिका से आने वाले विमानों और उनके पार्ट्स की लागत चीन में दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है, जिससे चीनी एयरलाइनों के लिए बोइंग विमान खरीदना और संचालित करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक हो गया है।ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन अब उन एयरलाइनों की मदद करने के तरीके तलाश रहा है जिन्होंने पहले से बोइंग विमान लीज पर ले रखे हैं और अब बढ़ी हुई लागत का सामना कर रही हैं। चीन का यह फैसला बोइंग के लिए एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि चीन दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है। अनुमान है कि अगले 20 वर्षों में वैश्विक विमानों की कुल मांग का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा अकेले चीन से आएगा। साल 2018 में बोइंग ने जितने विमान बेचे थे, उनमें से करीब एक-चौथाई (25त्न) चीन को ही डिलीवर किए गए थे।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

घिबली का ट्रेंड

घिबली एप से अपनी तस्वीरों को नया कलेवर देने के लिए लोग पागल हुए जा रहे हैं, बिना यह जाने-समझे कि इसका इस्तेमाल किस कदर खतरनाक है। आजकल आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) की मदद से अपनी तस्वीरों को स्टूडियो घिबली स्टाइल में बदलने का चलन आम जन को इस कदर अपनी आगोश में लिये हुए है कि इससे होने वाले नुकसान की चिंता किसी को रत्ती भर भी नहीं है। स्वाभाविक रूप से यह गोपनीयता के लिए गंभीर खतरा है। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों का भी यही मत है कि इसके इस्तेमाल में बेहद सतर्कता और समझदारी की जरूरत है। क्योंकि भले इस तरह के एप और एआई टूल्स सुरक्षित दिखें, मगर इनकी शत्रे और नियम बेहद अस्पष्ट होती हैं। एक बड़ा खतरा निजी तस्वीरों की चोरी और उसके गलत उपयोग का है।कई बार डीपफेक बनाने में कई सेलेब्रिटी की तस्वीरों का उपयोग किया गया है। कई बार तो फोटो या डाटा डार्क वेब को बेचे भी गए हैं। दरअसल, घिबली जापानी एनिमेशन की कला शैली स्टूडियो घिबली का ट्रेंड ओपन एआई के जीपीटी-40 मॉडल है, जिसमें तस्वीरों में महज आपका चेहरा ही नहीं बल्कि आपकी लोकेशन, वक्त और डिवाइस की जानकारी जैसा छिपा हुआ मेटाडाटा भी होता है और ये सभी निजी गोपनीय जानकारी आसानी से दे सकते हैं।हम भारतीयों में भेड़ चाल चलने की बुरी आदत घर कर चुकी है। कोई भी नई तकनीक का इस्तेमाल हम बिना उसके गुण-दोष के आधार पर नहीं करते हैं। साइबर युग में इस तरह की गलती के बेहद खतरनाक अंजाम भुगतने की आशंका बलवती होती है। पहले भी तस्वीरों का डीपफेक की मदद से कितना भद्दा और गंदा मजाक किया गया, यह बताने की जरूरत नहीं है। सरकार इन सब बातों से भिज्ञ है, मगर उसकी तरफ से कोई चेतावनी या निर्देश देने की पहल अब तक नहीं की गई है। होना तो यह चाहिए कि जनता को इसके बारे में सूचना और प्रसारण मंत्रालय को एक जागरूकता कैंपेन चलाना चाहिए।सोशल मीडिया के जरिये सरकारी संस्थाओं को इस तरह के एप्लीकेशन पर बराबर नजर रखने और जनता को लगातार सतर्क रहने की कवायद करते रहना होगा। छोटी सी खुशी के चक्कर में बड़ा और कभी न भूलने वाले कृत्य को लेकर जनता को भी सोचना होगा। सिर्फ भीड़ का हिस्सा बनने से बचने में ही आज के वक्त में भलाई है।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता का भुवनेश्वर के एक गेस्ट हाउस में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद संबित पात्रा ने गर्मजोशी से स्वागत किया। दिल्ली विधानसभा के उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट भी मौजूद थे।

नये वक्फ कानून से दिक्कत किसे है

राधा रमण

राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद 8 अप्रैल को देशभर में वक्फ संशोधन कानून 2025 लागू हो गया है। केंद्र सरकार ने इसकी अधिसूचना जारी कर दी है। यह अधिसूचना भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दी गई है। वक्फ संशोधन विधेयक को पिछले सप्ताह संसद के दोनों सदनों से मंजूरी मिल गई थी। हालांकि इस कानून को कई मुस्लिम संगठनों और राजनेताओं ने अल्पसंख्यक हितों के खिलाफ बताते हुए कोर्ट में चुनौती दी है। देश के अलग-अलग भागों में इस कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। खासकर कांग्रेस समेत देश के विपक्षी दल इसके विरोध को हवा दे रहे हैं। इस कानून के विरोध में याचिका दाखिल करनेवालों में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, ऑल इंडिया मजलिस-ए इत्तेहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष सांसद असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी, तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा, राष्ट्रीय जनता दल के सांसद मनोज झा और द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के प्रतिनिधि समेत 12 लोग शामिल हैं। उधर, केंद्र सरकार ने भी सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दाखिल कर मांग की है कि मामले की सुनवाई की पूर्व सूचना उसे भी दी जाए ताकि समय रहते वह भी अपना पक्ष रख सके। इस बीच, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने देशभर में 'वक्फ बचाव अभियान' शुरू कर दिया है। इसके तहत एक करोड़ लोगों का हस्ताक्षर कराकर प्रधानमंत्री को सौंपा जाएगा। यह अभियान 7 जुलाई तक चलेगा। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर इस कानून में क्या है जिससे मुस्लिम संगठनों और विपक्षी दलों का 'इस्लाम' खतरे में आ गया है।

दरअसल, विपक्ष और नये वक्फ कानून का विरोध करनेवालों का कहना है कि सारा विवाद वक्फ बोर्ड की सम्पत्तियों पर कब्जे को लेकर है। देशभर में वक्फ बोर्डों के पास 9.4 लाख एकड़ की जमीन है। इससे ज्यादा भूमि का स्वामित्व रेलवे और सशस्त्र बलों के पास है। वक्फ बोर्डों के पास यह सम्पत्तियां मुसलमानों द्वारा दान की गई हैं, जिन पर दरगाह, मस्जिद, कब्रिस्तान, मदरसा, दुकान आदि स्थापित हैं। इसके अलावा बहुतेरी कृषि भूमि भी है। इसकी देखरेख के लिए देश के हर राज्य में वक्फ बोर्ड गठित किया गया है। समय-समय पर इन वक्फ बोर्डों पर आर्थिक घपले के आरोप लगाये जाते रहे हैं लेकिन चूंकि वक्फ मामलों की सुनवाई सरिया कानून के तहत होने, वक्फ के फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकने और सार्वजनिक अदालतों में नहीं होने के कारण कोई भी आरोप साबित नहीं हो पाए हैं। उधर वक्फ बोर्डों के पदाधिकारी मालामाल होते रहे हैं।नये वक्फ कानून से आम मुसलमानों को कोई कठिनाई नहीं आएगी। वैसे भी वक्फ ने अपनी आमदनी का उपयोग किसी गरीब मुसलमान की पढ़ाई-लिखाई अथवा उसका जीवनस्तर सुधारने के लिए

किया हो इसका उदाहरण नहीं मिलता। काश, अगर वक्फ बोर्ड मुसलमानों की दशा-दिशा सुधारने की कोई पहल करता होता तो आज हालात कुछ और होते। हां, वक्फ बोर्डों पर काबिज लोग जीवनभर ऐशोआराम का जीवन जरूर जीते रहे।संसद में वक्फ बिल पर चर्चा का जवाब देते हुए अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरेन रिजजू ने बताया कि वक्फ बोर्डों के पास लाखों करोड़ की सम्पत्ति होने के बावजूद इसका इस्तेमाल गरीब मुसलमानों के पक्ष में नहीं होने के कारण अराजकता की स्थिति थी। हम बिल नहीं लाते तो वह संसद भवन पर भी दावा कर सकते थे। गृह मंत्री अमित शाह कहते हैं कि नये बिल से अब वक्फ के आदेश को अदालत में चुनौती दी जा सकेगी। पहले वक्फ का फैसला ही अंतिम होता था। यह गलत धारणा है कि नया वक्फ कानून मुसलमानों के धार्मिक आचरण, उनके द्वारा दान की गई सम्पत्ति में हस्तक्षेप करेगा। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान भी कहते हैं कि देशभर में वक्फ का दुरुपयोग करना एक बीमारी बन गई है। इसे रोकने में नया कानून कारगर होगा। आरिफ साहब कहते हैं कि गरीबों, कमजोरों और जरूरतमंदों पर अपनी आमदनी में से खर्च करने की बात कुरआन में भी लिखी गई है। लेकिन वक्फ यह सब कहां करता था। वक्फ के जरिये न तो कोई अस्पताल चलता है न ही बढ़िया स्कूल-कालेज। इसके जिम्मेदारों ने वक्फ को हमेशा अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया है। इसलिए वक्फ की जमीन पर धर्मार्थ काम करने की जरूरत है। उधर, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कहते हैं कि यह कानून मुसलमानों की सम्पत्ति हड़पने के लिए बनाया गया है। यह भारत के मूल विचारों पर हमला है। कांग्रेस इसका विरोध करेगी। ऑल इंडिया मजलिस-ए इत्तेहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष सांसद असदुद्दीन ओवैसी का कहना है कि भाजपा मस्जिद- मन्दिर में टकराव बढ़ाकर देश को अस्थिरता में धकेलना चाहती है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कहती हैं कि वह पश्चिम बंगाल में कानून को लागू नहीं होने देंगी। मुंगेरीलाल की तरह हसीन सपने देखते हुए बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव कहते हैं कि अगर बिहार में उनकी सरकार बनती है तो वह इस कानून को लागू नहीं होने देंगे। सपा-बसपा के नेता भी कुछ इसी तरह की बात कहते हैं। मुझे कहने दीजिए कि विपक्ष के नेता वक्फ कानून का विरोध कर सिर्फ और सिर्फ मुसलमानों के हमदर्द बनने का दिखावा कर रहे हैं। ये वही लोग हैं जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 370 हटाने का विरोध किया था। ये वही लोग हैं जो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लगाए टैरिफ पर चुप रहते हैं। ये वही लोग हैं जो महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की समस्या आदि पर सड़क पर निकल कर विरोध करना भूल गए हैं। ये वही लोग हैं जो समाज में जातीयता का जहर घोलने पर आमादा हैं। ये वही लोग हैं जो जाने-अनजाने भाजपा की बनाई बिसात पर चौसर खेलने को अभिशप्त हैं।दरअसल, भाजपा तो शुरू से चाहती है कि देश का जनमत हिन्दू-मुस्लिम में विभाजित हो जाए ताकि उसे आसानी से बहुमत मिलता रहे। सवाल नये वक्फ कानून पर नहीं, बल्कि कानून बनाने के समय पर होना चाहिए। 2014 और 2019 में जब भाजपा को संसद में पूर्ण बहुमत था। उस समय भाजपा चाहती तो यह कानून आसानी से बनाया जा सकता था। लेकिन तब भाजपा ने ऐसा नहीं किया। अब जबकि लोकसभा में भाजपा के महज 240 सांसद हैं तब यह कानून बनाकर भाजपा ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के मुखिया चिराग पासवान, राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी, हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा के जीतनराम मांझी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार सरीखे अपने सहयोगी दलों के नेताओं की मुस्लिम परस्ती को खुलेआम चुनौती दे दिया है। साथ ही यह संदेश भी कि ' वृंदावन में रहना है तो राधे-राधे कहना होगा'। बिहार में इसी साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होनेवाले हैं। इसका सर्वाधिक नुकसान नीतीश की पार्टी जनता दल (यू), चिराग पासवान की पार्टी लोजपा (रामविलास) और जीतनराम मांझी की पार्टी हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा को होगा। भाजपा ने अपने चक्रव्यूह में इन्हें घेर लिया है और निकलने का इनके पास कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। वक्फ बिल पर संसद में जनता दल के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीवरंजन सिंह उर्फ़ ललन सिंह की दलील सुनकर जदयू में भगदड़ की स्थिति बन गई और उसके दर्जनभर से अधिक नेताओं ने पार्टी छोड़ दी है। कई अभी पार्टी छोड़ने की कगार पर बैठे हैं और उचित समय का इंतजार कर रहे हैं।

राष्ट्र और मानवता के कल्याण हेतु धर्मानुकूल आचरण को अनिवार्य मानते हैं मोहन भागवत

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने गत दिवस गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुरा में स्थित सदगुरु धाम में श्री भावभावेश्वर महादेव मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से सचेत किया कि भय अथवा प्रलोभन का दैनिक जीवन में सामना करना पड़ सकता है और ये लोगों को उनके धर्म से दूर ले जा सकते हैं लेकिन धर्म ही खुशी की ओर ले जा सकता है। धर्म हमें जोड़ता है और सही रास्ते पर ले जाता है। इसीलिए भय या प्रलोभन के प्रभाव में आकर लोगों को अपना धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहिए। संघ प्रमुख ने कहा कि हम एक जुट होना जानते हैं और एक जुट होना भी चाहते हैं । हम किसी से लडना नहीं चाहते लेकिन आज भी कुछ ऐसी ताकतें मौजूद हैं जो चाहती हैं कि हम अपने आप को बदल बदल दें हमें ऐसी ताकतों से बच कर रहना है।संघ प्रमुख ने महाभारत काल का एक दृष्टांत देते हुए कहा कि उस काल में धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास करने वाली ताकतें मौजूद नहीं थीं लेकिन दुर्योधन ने पांडवों का राज्य हड़पने के लिए जो कुछ किया वह अधर्म था। संघ प्रमुख ने दैनिक जीवन में धार्मिक आचरण को व्यवहार में लाने का आह्वान करते हुए कहा कि लालच और भय हमें अपनी आस्था से विमुख करते हैं इसीलिए सदगुरु धाम जैसे स्थलों का निर्माण किया गया है। लोगों में धार्मिक चेतना के प्रचार प्रसार हेतु सदगुरु धाम के द्वारा संचालित गतिविधियों एवं कार्यों की सराहना करते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि यह संस्थान सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में जाकर आदिवासियों के उत्थान के लिए सामाजिक गतिविधियों का संचालन कर रहा है। अतीत में जब इस तरह के केंद्रों का अभाव था तब तपस्वी गांव गांव में अपने सत्संग कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को धर्म के मार्ग पर दृढ़ रखते थे लेकिन अब आबादी बढ़ जाने से सदगुरु धाम जैसे केंद्र बन गये हैं जहां समाज के लोग एकत्र हो कर पूजा करते हैं और आध्यात्मिक सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं । यहां उनके कला का अभ्यास करने का अवसर भी मिलता है। संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को रेखांकित किया कि सदगुरु धाम जैसे आध्यात्मिक केंद्र लोगों का धर्म परिवर्तन नहीं करते बल्कि उन्हें अपने धर्म पर दृढ़ रहकर धर्म के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे केंद्रों को मजबूत करना हमारी जिम्मेदारी है।इसी से हमारा कल्याण , राष्ट्र की सेवा और संपूर्ण मानवता का कल्याण सुनिश्चित होगा।भागवत ने कहा कि धर्म के अभाव में मनुष्य बुरी आदतों में पड़कर जीवन बर्बाद कर लेता है और धर्म के अनुसार आचरण करने से समाज और राष्ट्र का कल्याण होता है। यही हमारे राष्ट्र की प्रगति भी सुनिश्चित करता है। भागवत ने कहा कि हमारा सनातन धर्म किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखता इसीलिए सारी दुनिया भारत की ओर देख रही है । संघ प्रमुख ने कहा कि भारत को अपनी आध्यात्मिक परंपरा के मार्ग पर सतत अग्रसर रहना चाहिए क्योंकि सारी दुनिया मानती है कि भारत के पास ही इस क्षेत्र में सारी दुनिया का नेतृत्व करने का सामर्थ्य है।गौरतलब है कि गुजरात के वलसाड जिले के अंतर्गत धरमपुरा की हरी-भरी पहाड़ियों के मध्य बसा श्री सदगुरु धाम पिछले ढाई दशकों से दक्षिण गुजरात में विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ है । श्री सदगुरु धाम में निर्मित भगवान भाव भावेश्वर के भव्य मंदिर में दर्शन लाभ हेतु प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन होता है। इस भव्य मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सरसंघचालक मोहन भागवत की उपस्थिति ने इस समारोह को और भी महत्वपूर्ण बना दिया। 30 मार्च से 6 अप्रैल तक यहां शिव पुराण कथा का आयोजन किया गया जिसे सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। लगभग एक माह तक चलने वाले रजत जयंती समारोह में प्रथम दिवस से ही दूर दूर से श्रद्धालुओं के आगमन का क्रम जारी है।

मेष राशि: आज आपका दिन शुभ रहने वाला है। शिक्षकों के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला हैं। आपको जल्द ही बड़ी सफलता मिलने वाली है। अगर आप अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके हैं, तो आपको किसी अच्छी कंपनी से जॉब का ऑफर मिल सकता है। सिविल सेवा करने वाले लोग आज कुछ नया करेंगे। आज आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल रहेगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपका व्यापार बढ़ेगा साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

वृष राशि: आज आपके लिए दिन बेहतरीन रहने वाला है। आपको नौकरी में तरक्की के साथ-साथ आपकी इनकम में इंक्रीमेंट होने के योग हैं। आपका पारिवारिक जीवन अत्यंत सुखद रहने वाला है। आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके वैवाहिक जीवन में सुंदर तालमेल बना रहेगा। संतान की तरफ से आपको किसी प्रकार की खुशखबरी मिलेगी। आपके घर किसी जरूरी काम से दूर के किसी रिश्तेदार के आने की संभावना बन रही है।

मिथुन राशि: आज आपका दिन खुशहाल बीतेगा। आज आपका मन प्रसन्न रहेगा। लेखन आदि कार्यों से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। कार्यस्थल पर अफसरों के साथ सद्भाव बनाकर रखेंगे। आपको तरक्की के कई मौके मिलेंगे। आप अपनी कड़ी मेहनत और सकारात्मक व्यवहार के जरिए कठिन परिस्थितियों से बाहर निकलेंगे।

कर्क राशि: आज आपके लिए अनुकूल परिस्थितियां रहेंगी। आज आप किसी खेलकूद में हिस्सा ले सकते हैं। बिजनेस करने वालों को किसी अच्छी कंपनी से जुड़कर बिजनेस को बढ़ाने का सुनहरा मौका मिलेगा। बिजनेस से संबंधित यात्रा करनी पड़ेगी। आज आप कुछ अनुभवी लोगों से मिलेंगे। व्यापार में आपको काफी अच्छे फायदे देखने को मिलेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में अनुकूल परिणाम देखने को मिलेंगे।

सिंह राशि: आज आपके लिए दिन पॉजिटिव रहेगा। ऑफिस में कलीग्स के साथ अच्छा तालमेल बना रहेगा। सीनियर्स आपके काम से प्रसन्न होंगे। आपके लिए पदोन्नति के आसार हैं। कार्यस्थल पर समझदारी पूर्वक लिए गए फैसले आपको बेहतर परिणाम देंगे। आपके कार्यों में जीवनसाथी का सहयोग आपको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन खास रहने वाला है। किसी पुरानी जमीन जायदाद से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। आपको सरकारी क्षेत्र में अच्छी नौकरी मिलेगी। आप और आपका परिवार बहुत खुश होगा।

तुला राशि: आज आपका दिन आनंद और उत्साह से भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में आप अपने काम में कुछ नए विचार लाएंगे। आपका सकारात्मक रवैया ही आपको नौकरी में तरक्की दिलाएगा। आपके बॉस आपको एप्रिशिएट करेंगे। आपके सगे संबंधी आपके सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे। आज आपका, आपके मनपसंद जगह पर ट्रांसफर होगा। आज उम्मीद से अधिक लाभ की संभावना है।

वृश्चिक राशि: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। यदि आप कंस्ट्रक्शन के बिजनेस से जुड़े हुए हैं तो आपके के लिए लाभ के योग हैं आप अपने काम में कुछ परिवर्तन लाने का मन बना सकते हैं। दांपत्य रिश्ते को और मजबूत बनने के लिए जीवनसाथी को उपहार देंगे।

धनु राशि: आज आपका दिन खुशहाल बीतेगा। शिक्षा से संबंधी आपकी मनोकामना पूरी होगी। आपको परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ रिजल्ट मिलेंगे। अच्छे कॉलेज में आप एडमिशन पाएंगे। आगे चलकर आपको नये सुनहरे अवसर मिलने की संभावना बढ़ेगी। आप अपने खानपान पर ध्यान रखेंगे। जिससे आपकी सेहत फिट एण्ड फाइन रहेगी। अगर आप फाइनेंस डिपार्टमेंट या सेल्स में काम करते हैं तो आपको आपकी नॉलेज से काफी फायदा होगा।

मकर राशि: आज आपका दिन पाज़िटिव रहेगा। बिजनेस के सिलसिले में बनाई गई योजनाएं कारगर साबित होगी। आपके लिए धन लाभ की संभावना बढ़ेगी ?। मास कम्युनिकेशन के छात्रों के लिए खास अवसर मिलने की संभावना है। आपके अंदर कलात्मक चीजों के प्रति उत्साह पैदा होगा। आप किसी क्राफ्ट एग्जीबिशन में मित्रों के साथ जा सकते हैं। आप अपने अंदर सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखेंगे।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके लिए सफलता दिलाने वाला है। नौकरी ढूंढ रहे युवाओं को अच्छी नौकरी मिलने के योग हैं। प्रापर्टी डीलर का काम करने वालों के कामकाज बेहतर रहेंगे। मास्टर डिग्री ले रहे हैं तो आपको कैंपस सलेक्शन में अच्छी नौकरी मिल सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी। नौकरी कर रहे युवाओं को उच्च अधिकारियों का पूरा सपोर्ट मिलेगा।

मीन राशि: आज आपका दिन उत्साह से भरपूर रहेगा। आपको किसी अच्छी कंपनी से जॉब के लिए ऑफर मिलेगा। जिससे आपका भविष्य सुरक्षित होगा। आपकी मेहनत के अच्छे परिणाम मिलेंगे। आपके काम करने के तरीकों में बदलाव आएगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः अजूबा नहीं

विवेक रंजन श्रीवास्तव

एआई कोई अजूबा नहीं, बल्कि मानव मस्तिष्क की ही एक उपज है। यह हमारी जीवनशैली को अधिक आरामदायक, सुलभ और प्रभावशाली बना सकती है-बशर्ते हम इसे विवेक और संतुलन के साथ अपनाएँ।

विद्यालय के दिनों में विज्ञानः लाभ और हानि जैसे विषयों पर भाषण, वाद-विवाद और निबंध लिखना आम बात थी। समय बदला, विज्ञान ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पहले रेडियो, फिर टेलीविजन, मोबाइल और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के रूप में हमारी जिंदगी आसान बनाने के लिए हस्तक्षेप बढ़ाया है। आज एआई हमारी बातचीत, सोच, कामकाज, और यहां तक कि निर्णयों तक को प्रभावित कर रहा है। ऐसे में एआई के लाभ और हानि पर विचार करना आवश्यक हो गया है।

एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है, जो मशीनों को सीखने, तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। वर्ष 2025 में वैश्विक एआई बाज़ार 244.22 बिलियन तक पहुँच चुका है, और 2031 तक इसके 26.6त्न की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की संभावना है। यह दर्शाता है कि यह तकनीक केवल भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की भी एक सशक्त वास्तविकता है।

ए.आई. के लाभ

एआई के उपयोग से दक्षता और उत्पादकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यह 24/7 कार्य कर सकती है, मानव त्रुटियों को कम करती है, और डेटा विश्लेषण द्वारा निर्णय लेने में सहायता करती है। स्वास्थ्य, वित्त और निर्माण जैसे क्षेत्रों में यह क्रांतिकारी बदलाव ला रही है।

उदाहरण के लिए, विनिर्माण इकाइयों में एआई संचालित रोबोट उत्पादन को सुव्यवस्थित करते हैं। एआई आधारित चैटबॉट्स ग्राहक सहायता को बेहतर बनाते हैं-नेटफ्लिक्स की एआई सिफारिशें सालाना 1 बिलियन का मुनाफा कमा रही हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई नई दवाओं की खोज को गति दे रही है-जैसे नवीडिया और फाइज़र का 80 मिलियन का निवेश। यह खतरनाक कार्यों में

मानव जीवन की रक्षा करती है, और पर्यावरणीय मॉडलिंग से जलवायु संकट की समझ को बेहतर बनाती है।एआई का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह हर व्यक्ति के पास जानकारी और समाधान की पहुंच संभव बनाता है। इसके चलते शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के नए द्वार खुल रहे हैं।

ए.आई. के नुकसान

हर क्रांति की एक कीमत होती है। एआई के आगमन से स्वचालन बढ़ा है, जिससे पारंपरिक नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है। एचआर, ग्राहक सेवा, लेखांकन जैसे क्षेत्रों में मानव संसाधनों की आवश्यकता घट रही है।एआई को लागू करने की लागत भी ऊँची है-हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, और विशेषज्ञों की ज़रूरत छोटे व्यवसायों के लिए चुनौती है।गोपनीयता की बात करें तो एआई विशाल डेटा पर आधारित है, जिससे डेटा उल्लंघन, निगरानी, और एल्गोरिदमिक पक्षपात जैसे खतरे बढ़ जाते हैं।

एआई का अत्यधिक उपयोग मानवीय संबंधों और संवेदनशीलता को भी प्रभावित कर सकता है-यह भावनाओं को नहीं समझ सकती, जो कि स्वास्थ्य सेवा और मानसिक परामर्श जैसे क्षेत्रों में ज़रूरी हैं।

भविष्य की सबसे बड़ी चिंता यह है कि एआई कहीं ऐसी दिशा में न बढ़ जाए, जहाँ उसका नियंत्रण मानव के हाथों से निकल जाए। जनरेटिव एआई कभी-कभी भ्रामक जानकारी भी दे सकता है, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। यह मानना होगा कि एआई मानव का विकल्प नहीं, सहायक है। हमें इससे भयभीत होने की बजाय इसके लाभों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए, और इसकी सीमाओं को समझते हुए मानवीय संवेदनाओं, कला, संस्कृति और मौलिकता की रक्षा करनी चाहिए।एआई हमारे समय की वह क्रांति है, जो सही दिशा में उपयोग हो तो मानव जाति के लिए वरदान साबित हो सकती है-और गलत दिशा में गई तो चुनौती। ज़रूरत है इसे नियंत्रित नवाचार के सकारात्मक रास्ते पर आगे बढ़ाने की। जहां मानवीय क्षमता कुछ वर्किंग घंटे प्रतिदिन से अधिक नहीं हो सकती, ऐ आई हमारे लिए चौबीसों घंटे बिना थके लगातार काम कर सकता है। हम किसी काम को आज की जगह कल पर टाल सकते हैं, किंतु ए आई तुरत फुरत ही काम निपटाता है। बस हमें इसे सही प्राम्पट देने की आवश्यकता होती है। इसलिए ए आई के बढ़ते प्रयोग से प्राम्पट इंजीनियरिंग में रोजगार बढ़ भी रहे हैं । यह इस नई टेक्नोलॉजी का सकारात्मक प्रभाव है।

नड्डा के घर सीक्रेट बैठक, पीएम मोदी की राष्ट्रपति से मुलाकात.. क्या कुछ बड़ा करने की तैयारी में सरकार

सियासी गलियारों में अटकलों का बाजार गर्म

नई दिल्ली,(ए)। देश में इन दिनों नए वक्फ कानून को लेकर राजनीति जारी है। संसद से पारित नए कानून को लेकर विरोध प्रदर्शन की आग में जहां एक ओर पश्चिम बंगाल के कई इलाके हिंसा की आग में जल रहे हैं। वहीं कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को सुनवाई शुरु हो गई। इस बीच दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ-साथ बीजेपी के तमाम नेताओं की हालिया गतिविधि ने सभी का ध्यान खींचा है। अटकलें है कि क्या देश में कुछ बड़ा होने वाला है।

दरअसल बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा के आवास पर बीती रात एक हाई-प्रोफाइल बैठक ने इन बातों को हवा दी। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और अश्विनी वैष्णव जैसे दिग्गज नेता शामिल हुए। बीजेपी के शीर्ष नेताओं की यह बैठक करीब ढाई घंटे तक चली।

सूत्रों के मुताबिक, बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। शाह और सिंह जैसे नेताओं की मौजूदगी इसका संकेत देती है कि चर्चा में राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा से जुड़े मुद्दे भी शामिल हो सकते हैं। वहीं, पीयूष गोयल और अश्विनी वैष्णव का होना आर्थिक और बुनियादी ढांचे से जुड़े मसलों की ओर इशारा करता है। कुछ जानकारों का कहना है कि बैठक मंत्रिमंडल विस्तार या फेरबदल की संभावना को भी बल दे रही है। इसी बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति भवन पहुंचकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। यह मुलाकात भी करीब एक घंटे तक चली। हालांकि, मुलाकात का आधिकारिक एजेंडा सामने नहीं आया है।

उर्दू भारत में ही जन्मी भाषा, इसे किसी धर्म से जोड़ना है गलत

सुप्रीम कोर्ट ने सुनाया ऐतिहासिक फैसला, याचिका को किया खारिज

अकोला,(ए)। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के अकोला जिले में पातुर नगर परिषद के साइनबोर्ड पर उर्दू भाषा के इस्तेमाल को बरकरार रखते हुए एक अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि भाषा संस्कृति का हिस्सा है और इसे लोगों को बांटने का कारण नहीं बनना चाहिए। कोर्ट ने उर्दू को गंगा-जमुनी तहजीब की बेहतरीन मिसाल बताते हुए इसे भारत में जन्मी भाषा करार दिया है।जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने पातुर नगर परिषद की पूर्व पार्षद वर्षाताई संजय बागड़े की याचिका को खारिज कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में भारत की भाषाई विविधता की सराहना की और कहा कि हमें अपने पूर्वाग्रहों को त्यागकर हर भाषा से दोस्ती करनी चाहिए। कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर भारत का विभाजन न हुआ होता, तो हिंदी और उर्दू का मिश्रित रूप हिंदुस्तानी शायद देश की राष्ट्रीय भाषा होती। याचिकाकर्ता ने साइनबोर्ड पर उर्दू भाषा के इस्तेमाल को चुनौती दी थी और दावा किया था कि महाराष्ट्र स्थानीय प्राधिकरण अधिनियम, 2022 के तहत केवल मराठी का इस्तेमाल होना चाहिए। पीठ ने कहा कि भाषा किसी धर्म की नहीं होती, वह किसी समुदाय, क्षेत्र और लोगों की होती है।

सिल्क्यारा सुरंग का एक मनमोहक दृश्य, जहां उत्तरकाशी में सफलता कार्यक्रम आयोजित किया जाना है.

एयर होस्टेस से आईसीयू में कथित दुष्कर्म के मामले में मेदांता अस्पताल ने दी सफाई

गुरूग्राम (आरएनएस)। गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में एक 46 वर्षीय एयर हॉस्टेस के साथ कथित रूप से आईसीयू में दुष्कर्म किए जाने के आरोप ने सनसनी फैला दी है। महिला की ओर से दर्ज कराई गई शिकायत में कहा गया है कि वह 6 अप्रैल को अस्पताल के आईसीयू में वेंटिलेटर पर थी, जब किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनके साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता ने अस्पताल स्टाफ पर गंभीर आरोप लगाए हैं। इस मामले में गुरुग्राम पुलिस ने तुरंत एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, मेदांता अस्पताल की ओर से मेडिकल सुपरिटेंडेंट संजय दुरानी ने एक आधिकारिक बयान जारी कर कहा है कि अस्पताल को इस शिकायत की जानकारी दी गई है और वे पूरी तरह से जांच एजेंसियों के साथ सहयोग कर रहे हैं।बयान में कहा गया है, हमें एक मरीज की शिकायत के बारे में पता चला है और हम संबंधित अधिकारियों द्वारा की जा रही जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं। इस स्तर पर, कोई भी आरोप साबित नहीं हुआ है, और संबंधित समय अवधि के लिए अस्पताल से सीसीटीवी फुटेज सहित सभी प्रासंगिक दस्तावेज पुलिस को सौंप दिए गए हैं। हम जांच की प्रक्रिया में सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने स्टारलिंक के उपाध्यक्ष चाड गिब्स और वरिष्ठ निदेशक रयान गुडनाइट के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की और भारत में प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों, साझेदारियों और भविष्य के निवेश पर चर्चा की.

सुक्खू ने किलाड़ में बालिका आश्रम का दौरा कर बच्चों से की बातचीत

शिमला (आरएनएस)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने मंगलवार को बालिका आश्रम किलाड़ का दौरा किया और यहां रह रहे बच्चों से बातचीत की और आश्रम के क्लासरूम और उनके रहने के कमरों का निरीक्षण किया।

सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ने सभी अनाथ बच्चों को 'चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट' के रूप में अपनाया है और शिक्षा से लेकर उनकी देखभाल की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कानून बनाकर उन्हें यह अधिकार दिया है। उन्होंने बालिका आश्रम किलाड़ में रह रही बच्चियों से उन्हें मिल रही सुविधाओं के बारे में भी जानकारी ली।

मुख्यमंत्री ने आश्रम की सभी लड़कियों को पांच-पांच हजार रुपये देने के साथ-साथ शीघ्र ही उनको एक्सपोजर विजिट पर भेजने की घोषणा की। इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने सोमवार देर शाम एकलव्य स्कूल किलाड़ का भी दौरा किया और बच्चों के साथ बातचीत की। सभी बच्चे मुख्यमंत्री के मिलकर बेहद खुश थे।

रिहैब सेंटर में मरीज के साथ क्रूरता की हदें पार, पहले घसीटा फिर की बेरहमी से पिटाई , वीडियो वायरल

बेंगलुरु(आरएनएस)। कर्नाटक के बेंगलुरु से एक हैरान करने वाला वीडियो सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में बेंगलुरु के बाहरी इलाके में स्थित एक पुनर्वास केंद्र (रिहैब सेंटर) में एक मरीज के साथ क्रूरता की हदें पार करते हुए मारपीट की जा रही है। वीडियो में एक व्यक्ति पहले मरीज को घसीटता हुआ दिखाई दे रहा है, और फिर उस पर लगातार डंडों से वार कर रहा है। इस घटना का वीडियो वायरल होने के बाद लोगों में भारी आक्रोश है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग उठ रही है।

सामने आए सीसीटीवी फुटेज में साफ देखा जा सकता है कि आरोपी एक कमरे में इलाज करा रहे व्यक्ति को बंद कर देता है और फिर बेरहमी से डंडे से पीटता रहता है। चौंकाने वाली बात यह है कि वहां मौजूद अन्य लोग इस पूरी घटना को मूक दर्शक बनकर देखते रहते हैं। वीडियो में पीड़ित को लगातार पीटा जा रहा है। बताया जा रहा है कि यह वीडियो बेंगलुरु से लगभग 30 किलोमीटर दूर नेलमंगला ग्रामीण क्षेत्र के अंदर स्थित एक निजी पुनर्वास केंद्र का है।पुलिस के अनुसार, यह वीडियो हाल ही में सामने आया है, लेकिन घटना कुछ समय पहले हुई थी। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इसी केंद्र से जुड़ी कुछ तस्वीरों में हमले में शामिल कुछ व्यक्तियों को जन्मदिन मनाते हुए और चाकू से केक काटते हुए भी देखा जा सकता है। पुलिस ने इस मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए आर्म्स एक्ट सहित संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है।

बलबीर ने हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीनों के साथ लैस वैन को दी हरी झंडी

चंडीगढ़ (आरएनएस)। पंजाब के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने मंगलवार को यहाँ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण निदेशालय से हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीन और फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोप के साथ लैस अत्याधुनिक वैन को हरी झंडी देकर रवाना किया। गौरतलब है कि इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) ने अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक ज़िम्मेदारी (सीएसआर) पहलकदमी के तहत, पीपल-टू-पीपल हेल्थ फाउंडेशन के सहयोग से पंजाब के स्वास्थ्य विभाग को दो हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीनें और दो फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोप दान किए हैं।

सिंह ने आईओसीएल का धन्यवाद करते हुए कहा कि ये मशीनें संगरूर और मलेरकोटला जिलों डायग्नोस्टिक क्षमताओं को और मजबूत करेंगी। उन्होंने कहा कि पंजाब में किए गए 2020-21 के सर्वेक्षण में 2.8:1 का प्रीवलेंस-नोटिफिकेशन अनुपात सामने आया, जो कि स्क्रीनिंग प्रयासों में बढ़ोतरी की आवश्यकता को दर्शाता है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि 40 फीसदी से अधिक नोटिफाई केस बिना लक्षण वाले थे और इनका पता एक्स-रे के माध्यम से लगाया गया था, जो इस डायग्नोस्टिक साधन की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

मकान की तीसरी मंजिल पर बेडरूम में घुस गया सांड, नीचे उतारने के लिए बुलानी पड़ी क्रेन

जमशेदपुर (आरएनएस)। जमशेदपुर के सोनारी इलाके में एक सांड की वजह से घंटों अफरा-तफरी मची रही। सांड एक मकान का दरवाजा खुला पाकर न सिर्फ अंदर घुस आया, बल्कि सीढ़ियों से मकान की तीसरी मंजिल पर जा पहुंचा और जमकर उत्पात मचाया। मोहल्ले के लोगों की लाख मशक्कत के बाद सांड नीचे नहीं उतरा। करीब चार घंटे बाद सांड को एक क्रेन के सहारे छत के रास्ते से नीचे उतारा गया।बताया गया कि सोनारी आदर्श नगर के न्यू ग्वाला बस्ती के रिहायशी इलाके में बुधवार को तीन सांड सड़क पर आपस में लड़ रहे थे। इसी दौरान एक सांड मनोज यादव नामक शख्स के घर के अंदर दाखिल हो गया। उसे निकालने की कोशिश की गई तो वह बाहर निकलने के बजाय सीढ़ियों से होता हुआ तीसरी मंजिल पर स्थित बेडरूम में जा पहुंचा। उसने बेडरूम के सामान इधर-उधर कर दिए।इसकी जानकारी मिलते ही मोहल्ले के सैकड़ों लोग घर के अंदर और बाहर इकट्ठा हो गए। कुछ लोगों ने सांड की गर्दन में रस्सी बांधकर नीचे उतारने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। बाद में 'बजरंग दल' संगठन से जुड़े लोगों ने एक क्रेन बुलाया। 10-12 लोगों ने एक साथ ऊपरी मंजिल पर पहुंचकर सांड को रस्सी से बांधा और इसके बाद छत के रास्ते क्रेन के सहारे धीरे-धीरे नीचे उतारा।कुछ स्थानीय लोगों ने पूरे घटनाक्रम का वीडियो रिकॉर्ड किया, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जमशेदपुर में आवारा सांड के उत्पात और हमले की यह कोई पहली घटना नहीं है। इसी साल जनवरी में साकची थाना अंतर्गत एमजीएम गोलचक्कर के पास पोटका हल्दीपोखर निवासी महफूज सांड के हमले में बुरी तरह जख्मी हो गए थे।मार्च 2023 में शहर के साकची शीतला मंदिर के पास सड़क पर घूम रहे सांड ने दो लोगों अशोक अग्रवाल और राज किशोर सिंह को पटककर मार डाला था। इस सांड को काबू करने में पुलिस-प्रशासन को भारी मशक्कत करनी पड़ी थी।

हिसार एयरपोर्ट के निकट बनाया जाएगा आईएमसी : सैनी

चंडीगढ़ (आरएनएस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने मंगलवार को कहा कि हिसार एयरपोर्ट के निकट लगभग तीन हजार एकड़ में औद्योगिक मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (आईएमसी) स्थापित किया जाएगा।

सैनी ने इस संबंध में नागरिक उड्डयन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। बाद में जा बयान में उन्होंने कहा कि प्रदेश औद्योगिक विकास को गति देने के लिए हिसार स्थित महाराजा अग्रसेन एयरपोर्ट के नजदीक लगभग 3 हजार एकड़ में औद्योगिक मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (आईएमसी) स्थापित किया जाएगा। इस पर लगभग 4,680 करोड़ की लागत आएगी।

उन्होंने बताया कि आईएमसी हरियाणा सरकार नैशनल इन्डस्ट्रीअल कॉरिडर डेवलपमेंट के साथ मिलकर विकसित करेगी। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के विकसित होने से लगभग 32 हजार करोड़ का निवेश आने और दस हजार से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होने की संभावना है।

बाजवा अपने स्वार्थों के लिए किसी अप्रिय घटना के होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं : मान

संगरूर (आरएनएस)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार को पंजाब में 50 बम आने के दावे का खुलासा करने से भागने के लिए विपक्षी दल के नेता प्रताप सिंह बाजवा पर निशाना साधते हुए कहा कि बाजवा अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए किसी अप्रिय घटना के होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि लोगों में दहशत फैलाई जा सके।मान ने कहा कि अगर बाजवा के पास बमों के बारे में किसी भी तरह की जानकारी है, तो वे इसे सार्वजनिक करने से क्यों हिचक रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि बाजवा इन बमों के फटने की प्रतीक्षा में बैठे हैं, क्योंकि वे पंजाब की शांति और कानून व्यवस्था की आड़ में राजनीतिक रोटियां सेंकने की ताक में हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाजवा ने पंजाब के शांतिप्रिय लोगों में बिना किसी आधार के दहशत फैलाई है और जब सरकार ने बाजवा के इस भ्रामक बयान के खिलाफ मामला दर्ज किया, तो अब वह कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए वकीलों की भीड़ जुटा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि विपक्षी दल के नेता को ऐसी ओछी राजनीति से बचना चाहिए क्योंकि आम लोगों में दहशत पैदा करके वोट हासिल करने का भ्रम नहीं पालना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष को ऐसी बेतुकी बयानबाजी करने के बजाय मुद्दों पर आधारित राजनीति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मान ने कहा कि लोगों की खुशहाली और राज्य की भलाई के लिए वे समर्पित होकर काम कर रहे हैं, लेकिन कुछ राजनीतिक नेताओं को यह हजम नहीं हो रहा, जिसके कारण वे बार-बार मेरे खिलाफ जहर उगल रहे हैं।

उन्होंने कहा,पारंपरिक पार्टियां मुझसे ईर्ष्या करती हैं क्योंकि मेरा संबंध साधारण परिवार से है। ये नेता सत्ता में बने रहने को अपना मूलभूत अधिकार समझते थे, जिसके कारण इन्हें यह हजम नहीं हो रहा कि एक आम आदमी इतने बेहतर ढंग से राज्य का शासनकाल कैसे चला रहा है। उन्होंने कहा कि कल यही नेता मेरी तारीफ करते थे कि बहुत अच्छा कलाकार है, जब मैं टीवी पर कलाकार था।

मान ने अकाली नेता सुखबीर सिंह बादल पर निशाना साधते हुए कहा कि सुखबीर बादल राजनीतिक रूप से असफल हो चुके राजनेता हैं जो अपने जघन्य अपराधों की सजा भुगत रहे हैं। राज्य की बागडोर संभालने के बाद ऐसे नेताओं ने कई साल तक लोगों को मूर्ख बनाया, लेकिन अब आम लोगों ने सही मायनों में अपनी ही सरकार को वोट देकर सत्ता में लाया है, जो दिन-रात पंजाब की तरक्की के लिए काम कर रही है।

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस, सीएम भजनलाल शर्मा ने खोला पिटारा, की 5 बड़ी घोषणाएं

जयपुर ,(आरएनएस)। राजस्थान पुलिस के 76वें स्थापना दिवस पर राजस्थान पुलिस एकेडमी (आरपीए) में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 5 बड़ी घोषणाएं की। वर्दी भत्ता से लेकर मेस भत्ता बढ़ाने का ऐलान किया।सीएम ने पुलिस बल को संबोधित करते हुए कहा कि वर्दी भत्ता 7 हजार रुपए से बढ़ाकर 8 हजार रुपए और मेस भत्ता 2400 से बढ़ाकर 2700 रुपए किया गया। इसके अलावा, रोडवेज की एक्सप्रेस बसों के साथ-साथ सेमी डीलक्स बसों में भी निशुल्क यात्रा का लाभ पुलिसकर्मी ले पाएंगे। सीएम ने आगे कहा कि 200 करोड़ रुपये का पुलिस मॉडर्नाइजेशन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड गठित किया जाएगा। इसके अलावा, उन्होंने पुलिस विभाग एवं कारागार विभाग में कार्यरत लांगुरिया के मानदेय में 10 फीसदी वृद्धि का भी ऐलान किया। मुख्यमंत्री भजन लाल ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान में पुलिस आधुनिकीकरण और आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए 200 करोड़ रुपये का पुलिस मॉडर्नाइजेशन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड गठित किया जाएगा। कानून व्यवस्था को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से पुलिस में 10 हजार पदों पर भर्ती की स्वीकृति प्रदान की गई है। प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति सुधारने और अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए 5,500 नए पदों का सृजन किया गया है, साथ ही इस वर्ष 3,500 अतिरिक्त पद सृजित करने का प्रस्ताव है।उन्होंने कहा कि पद्मिनी, कालीबाई और अमृता देवी महिला पुलिस बटालियनों की स्थापना के लिए पदों की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी की गई है। इसके अलावा, 500 कालका पेट्रोलिंग टीमों के गठन के लिए प्रथम चरण में 1 हजार कांस्टेबल के नए पदों के सृजन की स्वीकृति भी दी गई है। पुलिस की नई इकाइयों के लिए 250 लांगरी पद सृजित किए गए हैं, और पुलिस और कारागार विभाग में कार्यरत लांगरियों के मानदेय में 10 प्रतिशत की वृद्धि की गई है।सीएम ने आगे कहा कि पुलिस को और प्रभावी बनाने के लिए पुलिस मुख्यालय को 60 करोड़ रुपये की वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। पुलिस मोबिलिटी के लिए 750 मोटरसाइकिल और 500 हल्के वाहन उपलब्ध कराए गए हैं, जबकि पुलिसकर्मियों को आधुनिक उपकरण प्रदान करने के लिए 27 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं।

केजरीवाल और भगवंत मान के खिलाफ भी दर्ज होनी चाहिए एफआईआर : परगट सिंह

मोहाली, (आरएनएस)। पंजाब में कांग्रेस नेता प्रताप सिंह बाजवा के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद मामला गरमा गया है। पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक परगट सिंह ने एफआईआर पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की एफआईआर तो केजरीवाल और भगवंत मान पर भी होनी चाहिए। कांग्रेस विधायक परगट सिंह ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, जिस तरह से प्रताप सिंह बाजवा पर एफआईआर की गई है, इस तरीके की 100 एफआईआर भगवंत मान और अरविंद केजरीवाल पर होनी चाहिए, क्योंकि उनकी तरफ से भी गलत जानकारियां दी गई हैं। दिल्ली चुनाव के दौरान उन्होंने कहा था कि हमारे पानी में जहर घोल दिया गया है। जब चुनाव आयोग ने इस मामले पर नोटिस जारी किया तो उन्हें माफी मांगनी पड़ी थी।उन्होंने आगे कहा, इस तरह की एफआईआर पहले भी दर्ज की गई हैं। भारत भूषण आशु, किक्की ढिल्लों और सुखपाल सिंह खैरा के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई थी, लेकिन उनका क्या रहा? मुझे लगता है कि यह एफआईआर भी लोटस ऑपरेशन की तरह है, क्योंकि उनके ही विधायक ने बयान दिया था कि 25-25 करोड़ रुपए ऑफर किए गए थे। इसका कोई फायदा नहीं होगा।

भोजपुरी एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने इंस्टाग्राम पर शेयर की ग्लैमरस तस्वीरें, फैंस हुए दीवाने

भोजपुरी फिल्मों और टीवी इंडस्ट्री की मशहूर एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने अपने लेटेस्ट इंस्टाग्राम पोस्ट से इंटरनेट पर सनसनी मचा दी है. हाल ही में उन्होंने अपनी कुछ हॉट और ग्लैमरस तस्वीरें शेयर की हैं, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं. आकांक्षा ने इन तस्वीरों में ऑरेंज कलर की बोल्ड ड्रेस पहनी हुई है और उनके स्टाइलिश अंदाज को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं. उनके इस लुक पर फैंस और सेलेब्रिटीज कमेंट कर तारीफों के पुल बांध रहे हैं. किसी ने उन्हें ग्लैम क्वीन कहा तो किसी ने उनकी तुलना बॉलीवुड डीवाज से कर दी.

गौरतलब है कि आकांक्षा पुरी सिर्फ भोजपुरी फिल्मों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने बॉलीवुड और टीवी में भी अपनी एक खास पहचान बनाई है. बिग बॉस ओटीटी और कई म्यूजिक वीडियो में नजर आ चुकीं आकांक्षा अपने फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं.

उनकी यह पोस्ट न सिर्फ उनके फैंस बल्कि फैशन लवर्स के बीच भी चर्चा का विषय बन गई है. इंस्टाग्राम पर उनकी इन तस्वीरों को अब तक हजारों लाइक्स और कमेंट्स मिल चुके हैं, जिससे यह साफ है कि उनकी फैन फॉलोइंग जबरदस्त है.

ग्राउंड जीरो कश्मीर में रचेगी इतिहास, 38 साल बाद श्रीनगर में होने जा रहा पहली फिल्म का रेड कार्पेट प्रीमियर

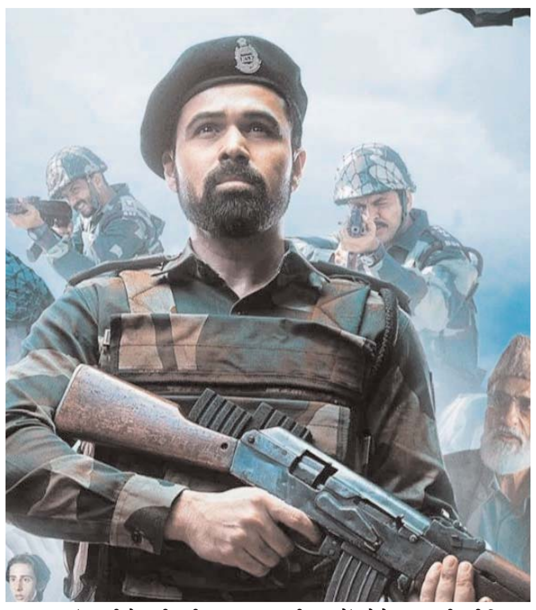

ग्राउंड जीरो की श्रीनगर (कश्मीर) में होने जा रही प्रीमियर के जरिए मेकर्स की ये खास कोशिश है कि सबसे पहले ये फिल्म उन जांबाज जवानों और आर्मी अफसरों को दिखाई जाए, जो सरहद पर खड़े होकर हमारी हिफाजत कर रहे हैं. एक्शन थ्रिलर ग्राउंड जीरो को लेकर हर दिनों जोश और उत्साह बढ़ता जा रहा है. दमदार ट्रेलर रिलीज के बाद फिल्म के नए-नए पोस्टर्स ने भी लोगों की दिलचस्पी और बढ़ा दी है. इसी बीच अब ये फिल्म इतिहास रचने जा रही है, ग्राउंड जीरो होगी 38 साल बाद श्रीनगर (कश्मीर) में रेड कार्पेट प्रीमियर पाने वाली पहली फिल्म. प्रीमियर 18 अप्रैल को होगा और इसे लेकर फैंस और इंडस्ट्री दोनों में जबरदस्त क्रेज है।

ग्राउंड जीरो 18 अप्रैल को श्रीनगर में होने वाले अपने रेड कार्पेट प्रीमियर के साथ नया इतिहास रचने जा रही है. हैरानी की बात ये है कि पिछले 38 सालों में श्रीनगर में किसी भी फिल्म का प्रीमियर नहीं हुआ और अब ग्राउंड जीरो इस खामोशी को तोड़ने वाली पहली फिल्म बनेगी. इस खास मौके पर फिल्म सबसे पहले दिखायी जाएगी उन जवानों और आर्मी अफसरों को, जो बॉर्डर पर खड़े होकर हमारी हिफाजत कर रहे हैं. ये कदम न सिर्फ फिल्म के देशभक्ति से जुड़े विषय को बखूबी दर्शाता है, बल्कि असली हीरोज को सच्ची श्रद्धांजलि भी है।

ग्राउंड जीरो को दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिल रहा है और इसके रिलीज को लेकर जोश साफ झलक रहा है. बीएसएफ द्वारा समर्थन प्राप्त इस फिल्म का ट्रेलर भी खूब सराहा गया, जिसने दर्शकों की उम्मीदों और उत्साह को और भी बढ़ा दिया है.इसके अलावा, फिल्म ग्राउंड जीरो की कहानी कश्मीर पर आधारित है और इसकी पूरी शूटिंग भी वहीं हुई है. इमरान हाशमी ने फिल्म में बीएसएफ कमांडेंट नरेंद्र नाथ दुबे का किरदार निभाया है, जिन्होंने गाजी बाबा को मार गिराने वाले ऑपरेशन का नेतृत्व किया था. यह मिशन बीएसएफ के पिछले 50 सालों में सबसे बेहतरीन ऑपरेशन के तौर पर दर्ज है. ग्राउंड जीरो एक सच्ची घटना पर आधारित है, जो भारतीय इतिहास के एक कम सुने गए लेकिन बेहद अहम अध्याय को दर्शकों के सामने लाती है।

गाजी बाबा जैश-ए-मोहम्मद का एक टॉप कमांडर और हरकत-उल-अंसार नाम के आतंकी संगठन का डिप्टी कमांडर था. उसे 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर हुए हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है।

निधि अग्रवाल ने हरि हर वीरा मल्लू में अपनी भूमिका के बारे में बात की

निधि अग्रवाल ने हरि हरा वीरा मल्लू में मुख्य महिला प्रधान भूमिका निभाई है, जिसमें पवन कल्याण एक डाकू की मुख्य भूमिका में हैं। यह पीरियड ड्रामा जल्द ही रिलीज़ के लिए तैयार है।हरि हर वीर मल्लू की टीम ने एक वीडियो जारी किया जिसमें निधि ने अपने किरदार पंचमी का खुलासा किया।मैं हरि हर वीर मल्लू में पंचमी का किरदार निभा रही हूँ। पंचम एक ऐसी लड़की है जो बलशाली, स्वतंत्र और भावुक है। उसकी अपनी कहानी और अपना उद्देश्य है, उन्होंने कहा। मैं कहूंगी कि पंचमी एक बहुत बहादुर और बुद्धिमान लड़की है। निधि अग्रवाल ने कहा कि यह किरदार निभाना बहुत मजेदार था।

नरेश अगस्त्य राबिया खातून की फिल्म मेघलु चेप्पिना प्रेमा कथा का फर्स्ट लुक जारी

मेघलु चेप्पिना प्रेम कथा का फर्स्ट लुक जारी। नरेश अगस्त्य ने फिल्म मथु वडालारा से प्रसिद्धि पाई। उन्होंने काली और विकटकवि जैसी फिल्मों में अभिनय किया। अब वह एक रोमांटिक फिल्म के साथ मनोरंजन करने आ रहे हैं और इसका दिलचस्प नाम मेघलु चेप्पिना प्रेम कथा है।

इस फिल्म में राबिया खातून मुख्य भूमिका में हैं और इसका निर्देशन विपिन ने किया है। निर्माताओं ने फिल्म का फर्स्ट लुक जारी किया और यह रोमांटिक तत्वों से मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। इसमें मुख्य जोड़ी और गिटार दिखाया गया है और इसने फिल्म प्रेमियों के बीच उत्सुकता के स्तर को तुरंत बढ़ा दिया है।

फिल्म में राधिका सरथकुमार मुख्य भूमिका में हैं, जबकि जस्टिन प्रभाकरन संगीत निर्देशक हैं। सिनेमैटोग्राफी मोहन कृष्ण द्वारा की गई है। फिल्म का निर्माण सुनेत्रा एंटरटेनमेंट के बैनर तले किया गया है।

यह फिल्म अमेरिका से लौटे एक संगीतकार के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने जुनून को आगे बढ़ाता है और इस प्रक्रिया में उसे किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

जाट बॉक्स ऑफिस कलेक्शनः 5 दिनों में 50 करोड़ का आंकड़ा किया पार, बनी 2025 की चौथी सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म

सनी देओल की फिल्म जाट बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन कर रही है. यह फिल्म 10 अप्रैल, 2025 को स्क्रीन पर आई. इस लेटेस्ट एक्शन फिल्म ने ओपनिंग डे पर शानदार कमाई की और सनी देओल की दूसरी सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्म बनकर उभरी. वहीं, पहले वीकेंड पर खास तौर पर रविवार को फिल्म की कमाई में जबरदस्त बढ़ोतरी देखने को मिली. पिछले चार दिनों के शानदार प्रदर्शन के बाद, अंबेडकर जयंती की छुट्टी पर भी यह अच्छा रुझान दिखा रही है. तो चलिए जानते हैं कि भारतीय बॉक्स ऑफिस पर जाट का कलेक्शन कितना हुआ है...सनी देओल-रणदीप हुड्डा की मुख्य भूमिकाओं वाली फिल्म जाट ने वीकेंड पर अच्छी कमाई की है. मेकर्स के मुताबिक, जाट ने पहले दिन 11.6 करोड़ रुपये कमाए. जबकि दूसरे दिन यानी शुक्रवार को इसने 8.5 करोड़ रुपये के साथ 2 दिनों में 20.1 करोड़ रुपये का बिजनेस किया. शनिवार और रविवार को फिल्म के कलेक्शन में उछाल देखा गया.शनिवार को फिल्म ने 12.1 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद 3 दिनों के बाद फिल्म का टोटल कलेक्शन 32.2 करोड़ रुपये हो गए. रविवार को फिल्म ने सबसे ज्यादा कमाई की. मेकर्स की रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म ने 17.1 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद 4 दिनों के बाद फिल्म का टोटल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 49.3 करोड़ रुपये हो गया है।

14 अप्रैल को जाट ने अच्छी कमाई की है. फिल्म को अंबेडकर जयंती की छुट्टी का भरपूर फायदा मिला है. सनी देओल की एक्शन थ्रिलर फिल्म ने फर्स्ट मंडे को 8.9 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है. इस प्रकार, भारत में जाट ने 5 दिनों में ही 50 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. मेकर्स की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, जाट का कुल कलेक्शन 58.2 करोड़ रुपये हो गया है।

सनी देओल की नई फिल्म जाट अब 2025 की चौथी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली बॉलीवुड फिल्म बन गई है. इसने ओपनिंग वीकेंड में 49.3 करोड़ की कमाई की है. आईएमबीडी के अनुसार, पहले नंबर पर विक्की कौशल की छावा है, जिसने 59 दिनों में 600.6 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है।

दूसरे पायदान पर सलमान खान की सिकंदर है, जिसने 15 दिनों में 109.1 करोड़ रुपये कमाए है. इसने 9 दिनों में ही दुनियाभर में 200 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया था. यह फिल्म अभी भी सिनेमाघरों में बनी हुई है. तीसरी स्थान पर अक्षय कुमार की फिल्म स्काई फोर्स है. इसने दुनियाभर में 155.4 करोड़ रुपये और घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 122.3 करोड़ रुपये कमाए थे. 5वें नंबर पर शाहिद कपूर की देवा है. इसने भारत में 35.1 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था.सनी देओल की नई फिल्म जाट ने 1997 में रिलीज हुई बॉर्डर को पीछे छोड़ दिया है. गोपीचंद मालिनेनी निर्देशित ने बॉर्डर का लाइफटाइम कलेक्शन का रिकॉर्ड तोड़ दिया है. सैकनिल्क के मुताबिक, बॉर्डर ने भारत में 39.3 करोड़ रुपये का लाइफटाइम कलेक्शन किया था, जबकि दुनियाभर में इसने 55.5 करोड़ रुपये कमाए थे.जाट को अजित कुमार की गुड बैड अग्ली से कड़ी टक्कर मिल रही है, जो अब 100 करोड़ रुपये की ओर बढ़ रही है. इस बीच, बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की नई फिल्म सिकंदर अब बॉक्स ऑफिस पर फीका पड़ने लगा है. सिकंदर ने 15 दिनों में भारत में 109.1 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है।

बॉक्स ऑफिसः सलमान खान की सिकंदर औंधे मुंह गिरी, 16वें दिन का कारोबार जान लगेगा झटका

ईद के खास मौके पर आई सलमान खान की फिल्म सिकंदर बॉक्स ऑफिस पर मुंह के बल गिरी है। न तो दर्शकों ने फिल्म को सराहा और न ही समीक्षकों से इसे हरी झंडी मिली, जिसके चलते पहले दिन से ही यह टिकट खिड़की पर दर्शकों के लिए संघर्ष करती दिख रही है।

बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का हाल-बेहाल है और इसकी कमाई लाखों में सिमटी हुई है।

आइए जानें सिकंदर ने 16वें दिन कितने लाख रुपये कमाए। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, सिकंदर ने अपनी रिलीज के 16वें दिन यानी तीसरे सोमवार को 26 लाख रुपये का कारोबार किया। इसी के साथ भारत में इस फिल्म की कुल कमाई 109.36 करोड़ रुपये हो गई है।आज यानी 15 अप्रैल को आप इस फिल्म को केवल 99 रुपये में देख सकते हैं।फिल्म के निर्देशन की कमान एआर मुरुगदॉस ने संभाली है, जिन्होंने आमिर खान के साथब्लॉकबस्टर फिल्म गजनी बनाई थी। साजिद नाडियाडवाला फिल्म के निर्माता हैं।

द भूतनी की रिलीज डेट पोस्टपोन, अब अजय देवगन की रेड 2 से टकराएगी संजय दत्त की हॉरर कॉमेडी

संजय दत्त और मौनी रॉय स्टारर द भूतनी का रिलीज डेट पोस्टपोन कर दिया गया है. यह फिल्म इस हफ्ते रिलीज होने वाली थी, जो कि अब नहीं होगी. मेकर्स ने आखिरी समय में फिल्म की रिलीज डेट बदलने का फैसला किया है. अब द भूतनी बॉक्स ऑफिस पर अजय देवगन की रेड 2 से टकराएगी.संजय दत्त ने एक्स हैंडल पर द भूतनी की नई रिलीज डेट का खुलासा किया है. उन्होंने नई रिलीज डेट के साथ एक हॉरर फिल्म का नया पोस्टर साझा किया और कैप्शन में लिखा है, इंसान मोहब्बत वाली डेट फिक्स कर सकता है, भूतनी के आने की नहीं... वो कब आएगी, कैसे आएगी, ये सिर्फ वही जानती है. लगा था 18 अप्रैल को आएगी लेकिन अब आ रही है 1 मई को, तैयार रहना. द भूतनी- 1 मई 2025 को सिनेमाघरों में.अब द भूतनी 1 मई 2025 को रिलीज होगी. ध्यान देने वाली बात यह है कि संजय दत्त की हॉरर कॉमेडी फिल्म अब मजदूर दिवस यानी महाराष्ट्र दिवस पर अजय देवगन और रितेश देशमुख की रेड 2 से क्लैश करेगी।

फैशन को नया मोड़ दे रहे हैं कढ़ाई वाले कपड़े के हैंडबैग, जानिए उनके बारे में

भारतीय हस्तशिल्प की दुनिया में कढ़ाई वाले कपड़े के हैंडबैग एक अनोखा स्थान रखते हैं। ये न केवल सुंदर दिखते हैं, बल्कि इन्हें बनाने में लगी मेहनत और कला भी इन्हें खास बनाती है।इन बैग्स की खासियत यह है कि ये पारंपरिक कला को आधुनिकता के साथ जोड़ते हैं।आइए इन खास हैंडबैग्स के बारे में विस्तार से जानते हैं और जानते हैं कि कैसे ये भारतीय संस्कृति और फैशन का बेहतरीन मेल हैं।

बनारसी सिल्क से बने बैग

बनारसी सिल्क भारतीय रेशम का एक अहम हिस्सा है। इसके बने बैग्स में पारंपरिक बनारसी कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बेहद आकर्षक बनाती है। इन बैग्स का इस्तेमाल खास मौकों पर किया जाता है, जैसे शादी-ब्याह या त्योहारों पर।इनकी चमकदार सतह और नाजुक कढ़ाई इन्हें खास बनाती है। बनारसी सिल्क बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

कांजीवरम सिल्क बैग्स

कांजीवरम सिल्क दक्षिण भारत की मशहूर कढ़ाई वाली वस्त्रों में शामिल है।इसके बने बैग्स में कांजीवरम की पारंपरिक डिजाइन को शामिल किया जाता है, जिससे ये बहुत ही खूबसूरत दिखते हैं।इन बैग्स का रंग-बिरंगा पैटर्न और सोने-चांदी की तारों का उपयोग इन्हें खास बनाता है।कांजीवरम सिल्क बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

जरी की कारीगरी वाले बैग्स

जरी की कारीगरी भारतीय हस्तशिल्प का एक अहम हिस्सा है। इसके बने बैग्स में जरी की कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बहुत ही खास बनाती है।जरी की कारीगरी वाले बैग्स का इस्तेमाल रोजमर्रा की जिंदगी में किया जा सकता है या विशेष अवसरों पर भी।इनकी चमकदार सतह और नाजुक कढ़ाई इन्हें आकर्षक बनाती है। जरी की कारीगरी वाले बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं।

लखनवी चिकनकारी बैग्स

लखनवी चिकनकारी उत्तर प्रदेश की मशहूर हस्तकला है। इसके बने बैग्स में चिकनकारी की नाजुक कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बहुत ही आकर्षक बनाती है।

लखनवी चिकनकारी बैग्स का इस्तेमाल रोजमर्रा की जिंदगी में किया जा सकता है

या विशेष अवसरों पर भी। इनकी नाजुक कढ़ाई और सुंदर डिजाइन इन्हें खास बनाती है।

लखनवी चिकनकारी वाले बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

गर्मियों में बार-बार पेशाब आना कई बीमारियों के हो सकते हैं लक्षण, जानिए क्या कहते हैं डॉक्टर

आमतौर पर लोग गर्मी के मौसम में कम पेशाब करते हैं. ऐसा इसलिए क्योंकि शरीर के ज्यादातर विषाक्त पदार्थ पसीने के जरिए बाहर निकल जाते हैं. अगर आपको गर्मियों में भी बार-बार पेशाब आने की जरूरत महसूस होती है, तो सावधान हो जाइए. ऐसा इसलिए क्योंकि यह एक या दो नहीं बल्कि कई बीमारियों का लक्षण हो सकता है. गर्मियों में बार-बार पेशाब आने से यूटीआई, किडनी की समस्या और मूत्राशय की समस्या हो सकती है. गर्मियों में आमतौर पर ज्यादा पानी पिया जाता है. इसलिए हम यह मान लेते हैं कि चूंकि हम अधिक पानी पीते हैं, इसलिए हम अधिक पेशाब भी करते हैं. हालांकि, गर्मियों में बार-बार पेशाब आना कई गंभीर बीमारियों का संकेत हो सकता है. आइए खबर के माध्यम से जानते हैं गर्मियों में बार-बार पेशाब आने के क्या लक्षण हैं...

यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन या यूटीआई

इसका सबसे आम कारण यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन (यूटीआई) है. इस समस्या के कारण बार-बार पेशाब आता है और पेशाब करते समय जलन होती है. इससे बुखार भी हो सकता है.

डायबिटीज

डायबिटीज के रोगियों को भी बार-बार पेशाब आता है. इसमें डायबिटीज के शुरुआती लक्षण भी शामिल हैं। इस बीमारी की शुरुआत हर आधे घंटे में पेशाब आने से होती है.

डिहाइड्रेशन

गर्मियों में बार-बार पेशाब आने का एक कारण डिहाइड्रेशन भी हो सकता है. शरीर में पानी की कमी होने से पेशाब गाढ़ा हो जाता है और आपको बार-बार पेशाब जाना पड़ता है.

मूत्राशय या प्रोस्टेट की समस्या

कभी-कभी मूत्राशय ओवरएक्टिव हो जाता है, जिससे बार-बार पेशाब आने की जरूरत पड़ती है. इसके अलावा, अगर प्रोस्टेट ग्रंथि में कोई समस्या है, तो आपको बार-बार पेशाब जाना पड़ सकता है।. ऐसा इसलिए क्योंकि प्रोस्टेट ग्रंथि में समस्या होने पर सारा पेशाब एक बार में नहीं निकलता. इसलिए, अगर आपको गर्मियों में बार-बार पेशाब आता है, तो सतर्क हो जाएं और अपने डॉक्टर से सलाह लें.

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ब्राजील के साओ पाउलो में ब्रिक्स कृषि मंत्रियों की बैठक के दौरान ब्राजील के कृषि व्यापार समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करते हुए।

बांग्लादेश का बड़ा फैसला, भारत से धागे के आयात पर लगा दी रोक; जानें फैसले की वजह और इसका असर

ढाका (ए.)। बांग्लादेश के नेशनल बोर्ड ऑफ रेवेन्यू (एनबीआर) ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए भारत से धागे (सूत) के आयात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इस नए नियम के तहत बेनापोल, भोमरा, सोनामस्जिद, बंगलाबंधा और बुरिमारी जैसे प्रमुख भूमि बंदरगाहों के माध्यम से अब धागे का आयात नहीं किया जा सकेगा। यह कदम बांग्लादेश टेक्सटाइल मिल्स एसोसिएशन (बीटीएमए) द्वारा की गई शिकायतों के बाद उठाया गया है। बीटीएमए ने दावा किया था कि भारत से सस्ते सूत के आयात के कारण स्थानीय कपड़ा उद्योग को भारी नुकसान हो रहा है।बीटीएमए के अनुसार, भारत से जमीनी रास्ते से आयातित सूत की कीमत समुद्री मार्ग से आने वाले सूत की तुलना में काफी कम है, जिसके चलते स्थानीय मिलों को बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई हो रही है। उदाहरण के तौर पर, बांग्लादेश में 30 सिंगल सूत की कीमत 3.40 डॉलर प्रति किलोग्राम है, जबकि भारत में यह 2.90 डॉलर और वियतनाम में 2.96 डॉलर प्रति किलोग्राम है। इसके अतिरिक्त, बीटीएमए ने यह भी आरोप लगाया कि भूमि मार्ग के बंदरगाहों पर पर्याप्त बुनियादी ढांचे और जांच सुविधाओं की कमी के कारण आयातक गलत घोषणाएं करके टैक्स चोरी कर रहे हैं। हालांकि, बांग्लादेश के गारमेंट निर्यातकों ने इस निर्णय को आत्मघाती बताया है। बांग्लादेश निटवेयर मैन्युफैक्चरर्स एंड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन (बीकेएमईए) के अध्यक्ष मोहम्मद हातेम ने कहा कि यह

कदम तैयार कपड़ों के निर्यातकों के लिए लागत बढ़ा देगा और छोटे-मध्यम उद्यमों (एसएमबी) के लिए बाजार में प्रतिस्पर्धा और भी मुश्किल हो जाएगी। गौरतलब है कि बांग्लादेश का गारमेंट उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और यह भारत से लगभग 95 प्रतिशत सूत आयात पर निर्भर करता है। वर्ष 2024 में बांग्लादेश ने 1.25 मिलियन मीट्रिक टन सूत का आयात किया था, जो 2023 की तुलना में 31.5 प्रतिशत अधिक था।

अमेरिका का चीन पर कड़ा प्रहार, टैरिफ में भारी वृद्धि कर 245 प्रतिशत किया; वजह भी बताई

न्यूयॉर्क (आरएनएस)। अमेरिका ने चीन से आयातित वस्तुओं पर लगने वाले टैरिफ में भारी वृद्धि करते हुए इसे 245 प्रतिशत कर दिया है। यह कदम चीन द्वारा जवाबी कार्रवाई करते हुए अपने आयात पर शुल्क 125 प्रतिशत तक बढ़ाने के बाद उठाया गया है। पहले अमेरिका द्वारा चीनी सामान पर 145 प्रतिशत शुल्क लगाया जा रहा था, लेकिन अब इसमें एक साथ 100 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है।

अमेरिका का यह फैसला काफी सख्त माना जा रहा है, खासकर तब जब उसने भारत समेत कई अन्य देशों पर लगाए गए शुल्क को 90 दिनों के लिए रोक दिया है। माना जा रहा है कि इस अवधि में अमेरिका इन देशों के साथ व्यापार समझौते कर सकता है। भारत और अमेरिका के बीच तो बैकचैनल से व्यापार समझौते पर बातचीत भी शुरू हो गई है और संभावना है कि इसके लिए मई से बैठकों का दौर भी शुरू हो सकता है।

चीन के प्रति अमेरिका का रुख स्पष्ट है कि वह शुल्क का जवाब शुल्क से देगा और चीन को अपनी गलती माननी चाहिए। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि अमेरिका दूसरे देशों के सामान पर कम कर लगाता है, जबकि चीन और भारत जैसे कई देश उसके निर्यात पर भारी कर वसूलते हैं। इसी के जवाब में अमेरिका ने यह व्यापार युद्ध शुरू किया है।

व्हाइट हाउस का कहना है कि चीन का रवैया अड़ियल है, जबकि दुनिया के लगभग 75 देशों ने व्यापार समझौते के लिए उससे संपर्क किया है। इसी कारण अमेरिका ने कई देशों पर शुल्क को 90 दिनों के लिए टाल दिया है, ताकि इस दौरान किसी सहमति पर पहुंचा जा सके। इस अवधि में केवल 10 प्रतिशत का सामान्य शुल्क ही लागू रहेगा। गौरतलब है कि अमेरिका ने भारत पर भी 26 प्रतिशत शुल्क लगाया था, जिसे फिलहाल रोक दिया गया है।

अफगानिस्तान : भूकंप के झटकों से हिला हिंदुकुश क्षेत्र, रिक्टर स्केल पर तीव्रता 5.9 मापी गई

काबुल, (आरएनएस)।अफगानिस्तान के हिंदुकुश क्षेत्र में बुधवार सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के अनुसार, रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.9 मापी गई है।

एनसीएस ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, बुधवार तड़के स्थानीय समयानुसार 4:43 बजे अफगानिस्तान के हिंदुकुश क्षेत्र में भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.9 मापी गई है। भूकंप का केंद्र 35.83 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 70.60 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 75 किलोमीटर की गहराई पर था।

अभी तक किसी के हताहत होने या इमारतों को नुकसान की कोई तत्काल खबर नहीं है, लेकिन अधिकारी और मानवीय एजेंसियां स्थिति पर करीब से नजर रख रही हैं। हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला (जो उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान में फैली है) यह अत्यधिक भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र का हिस्सा है, जहां जटिल टेक्टोनिक संरचना के कारण भूकंप बार-बार आते हैं।

अफगानिस्तान भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों के बीच टकराव वाले क्षेत्र में स्थित है, जो इसे विशेष रूप से भूकंपीय गतिविधि के लिए संवेदनशील बनाता है। संयुक्त राष्ट्र मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (यूएनओसीएचए) ने देश की प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता को दोहराया, और कहा कि बार-बार आने वाले भूकंप उन समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं, जो पहले से ही दशकों के संघर्ष और पुराने अविकास से कमजोर हो चुके हैं।

रेड क्रॉस के अनुसार, अफगानिस्तान में विशेष रूप से हिंदुकुश जैसे भूगर्भीय

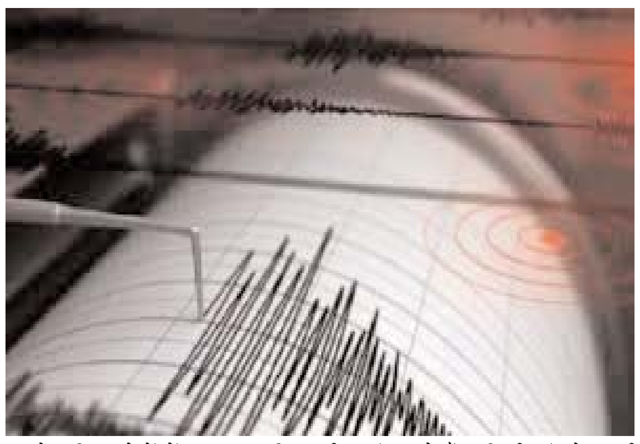

रूप से अस्थिर क्षेत्रों में हर साल शक्तिशाली भूकंप आते हैं। पश्चिमी प्रांत हेरात भी एक महत्वपूर्ण फॉल्ट लाइन पर स्थित है, जो देश के भूकंपीय जोखिम को और बढ़ाता है।अक्टूबर 2023 में, 6.3 तीव्रता सहित कई शक्तिशाली भूकंपों ने पश्चिमी अफगानिस्तान, विशेष रूप से हेरात को तबाह कर दिया था, जिसमें 1,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी और हजारों लोग विस्थापित हुए थे। उस त्रासदी ने क्षेत्र में आपदा प्रतिक्रिया प्रणालियों को मजबूत करने और दीर्घकालिक लचीलापन योजना की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया था।

पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी को भ्रष्टाचार के मामले में 15 साल की सजा

लीमा (आरएनएस)। पेरू की एक अदालत ने पूर्व राष्ट्रपति ओलांटा हुमाला और उनकी पत्नी नादिन हेरेडिया को धन शोधन का दोषी पाते हुए 15 साल जेल की सजा सुनाई है।

जज नायको कोरोनाडो की अध्यक्षता वाली थर्ड नेशनल कोलीजिएट क्रिमिनल कोर्ट ने मंगलवार को यह फैसला सुनाया। अन्य न्यायाधीशों ने फैसले का समर्थन किया। अदालत ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी ने लगभग नौ महीने पूर्व-ट्रायल हिरासत (ट्रायल से पहले की गिरफ्तारी) में बिताए हैं, उन्हें सजा की अवधि में शामिल माना जाएगा।

गौरतलब है कि पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी पर आरोप है कि ब्राज़ील की निर्माण कंपनी ओडेब्रेच ने 2006 से 2011 के बीच नेशनलिस्ट पार्टी को चुनावी अभियान के लिए उन्हें अवैध रूप से धन मुहैया कराया था।

गेंद चीन के पाले में है, हमें नहीं चिनफिंग को समझौता करने की जरूरत', टैरिफ विवाद पर बोला अमेरिका

वाशिंगटन(आरएनएस)। टैरिफ मामले पर चीन और अमेरिका के बीच तनातनी का माहौल है। ट्रंप के टैरिफ के जवाब में चीन ने भी 125 फीसदी शुल्क अमेरिकी सामान पर लगा दिया है। इस बीच मंगलवार को व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने चीन से जुड़े सवालों के जवाब दिए। टैरिफ विवाद के बाद टिकटॉक सौदे पर भी ग्रहण लगते दिख रहे हैं।

इस बीच ट्रंप प्रशासन ने 19 जून तक टिकटॉक को अमेरिका में कामकाज करने की मंजूरी दी है। जब व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव से पूछा गया कि अगर चीन बातचीत को तैयार नहीं होता है तो इस पर लेविट ने कहा कि दो महीने का समय काफी है। मैं आगे नहीं बढ़ना चाहती। उपराष्ट्रपति इन वार्ताओं और बातचीत का नेतृत्व कर रहे हैं। राष्ट्रपति भी इसमें शामिल हैं।

जब उनसे पूछा गया कि क्या ट्रंप टिकटॉक डील करने के लिए चीन पर टैरिफ कम करेंगे तो लेविट ने कहा कि चीन पर राष्ट्रपति की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप के एक बयान को साझा किया और कहा कि ओवल ऑफिस में ट्रंप ने यह बात मुझसे कही थी कि गेंद चीन के पाले में है। चीन को हमारे साथ समझौता करने की जरूरत है। हमें उनके साथ समझौता करने की जरूरत नहीं है।

फ्लाइट में लगी 21 करोड़ की लॉटरी, एयर होस्टेस ने उड़ते विमान में कर डाली ये हरकत

न्यूयॉर्क(आरएनएस)। एक एयर होस्टेस के आसमान में उस समय पंख लग गए जब उड़ान के दौरान उसकी किस्मत चमकी और वो उड़ रहे विमान में करोड़पती बन गई। उसके लिए खुशी का ठिकाना नहीं था, जिसके बाद उसने हवा में ही अपना रिजाइन दे दिया।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एयर होस्टेस ने कैसीनो गेम में 500 रुपये लगाकर 21 करोड़ की रकम जीत ली, कैसिनो एक्सपोज्ड की रिपोर्ट के अनुसार, कैसीनो डेज प्लेटफॉर्म एक लिमिटेड टाइम ऑफर चला रहा था, जिसमें इस महिला ने एक लाख रुपये की राशि

जमा 1 लाख तक की जमा राशि पर 150 प्रतिशत बोनस मिल रहा था। एयर होस्टेस बताती है कि इस गेम को खेलने के लिए पहले मैंने एक लाख लगाए उसे में दस और फिर 20 और देखते ही देखते मैंने अंत में 21,83,02,672 खाते में आ गए। इस रकम को जीतने के बाद मैंने कैसीनो डेज की सपोर्ट टीम से संपर्क किया और उन्होंने मुझे कहा कि हां ये खबर सच है और आप अब एक करोड़पति बन चुकी हैं। इसके बाद महिला ने फ्लाइट का इंटरकॉम उठाया और एक अप्रत्याशित घोषणा कर डाली, जिसमें उसने कहा कि देवियों और सज्जनों, यह आपकी एयर होस्टेस बोल रही है और यह मेरी आखिरी फ्लाइट है। ये बात सुनते ही लोग घबरा गए लेकिन जब महिला ने अपनी कहानी बताई तो केबिन में मौजूद लोग चीयर्स करने लगे।

खेल समाचार

चहल की फिरकी में फंसा केकेआर, पंजाब ने 111 रन डिफेंड करके रचा इतिहास

चंडीगढ़, (आरएनएस)। पंजाब ने आईपीएल इतिहास में अब तक के सबसे कम स्कोर का बचाव करके इतिहास रच दिया है. मुल्लांपुर में खेले गए आईपीएल 2025 के 31 वें मैच में पंजाब ने पहले 15.3 ओवर में 111 रन बनाए और फिर केकेआर को 15.1 ओवर में 95 रन पर ढेर कर दिया. पंजाब की जीत में अहम भुमिका निभाने वाले चहल ने 4 ओवर में 28 रन देकर 4 विकेट झटके, जिसकी वजह से उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड दिया गया.

111 रनो का बचाव करने के लिए पंजाब के गेंदबाजों ने शानदार गेंदबाजी की, युजवेंद्र चहल के अलावा तेज गेंदबाज मार्को जानसन ने तीन विकेट चटकाए और बाकी गेंदबाजों ने एक एक विकेट हासिल किए, जिसकी वजह से पंजाब आईपीएल के इतिहास में सबसे कम स्कोर का बचाव करने में कामयाब रहा.

112 रनों का पीछा करते हुए, कोलकाता ने अपने दोनों सलामी बल्लेबाज सुनील नरेन (5) और क्विंटन डी कॉक (2) को जल्दी-जल्दी खो दिया. उसके बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे और अंगकृष रघुवंशी ने सतर्क रुख अपनाया और पावरप्ले के अंत में टीम को 55/2 पर पहुंचा दिया. दोनों ने 60 रनों की साझेदारी की और केकेआर मैच जीतने की राह पर डाल दिया.

सौरभ चौधरी ने शूटिंग वर्ल्ड कप में रचा इतिहास, 10 मीटर एयर पिस्टल में जीता ब्रॉन्ज मेडल

पेरू, (आरएनएस)। पूर्व एशियाई खेलों और युवा ओलंपिक चैंपियन सौरभ चौधरी ने पेरू के लीमा में लास पालमास शूटिंग रेंज में वर्ष के दूसरे अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन चरण के पहले दिन 10 मीटर एयर पिस्टल पुरुष स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर अपनी झोली में एक और विश्व कप पदक जोड़ लिया.चीन के हू काई ने 246.4 के स्कोर के साथ गोल्ड मेडल जीता, जो विश्व रिकॉर्ड से सिर्फ 0.1 कम था, जबकि ब्राजील के ओलंपिक पदक विजेता फेलिप अल्मेडा वू ने सिल्वर मेडल जीता, जबकि सौरभ को 219.1 के साथ ब्रॉन्ज मेडल से संतुष्ट होने पड़ा.इससे पहले, दो भारतीय, सौरभ और वरुण तोमर ने शीर्ष-8 फाइनल में जगह बनाई थी, जिसमें सौरभ ने क्वालीफिकेशन में 578 के स्कोर के साथ पांचवां स्थान, जबकि वरुण ने 576 के साथ 8वां स्थान हासिल किया था. दोनों भारतीयों ने फाइनल में भी शानदार शुरुआत की, जिसमें सौरभ दूसरे और वरुण तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दूसरे चीनी झी यू ने शुरुआती पांच शॉट के बाद बढ़त हासिल की.हालांकि, इसके बाद भारतीय जोड़ी को 10-रिंग तक पहुंचने में मुश्किल हुई, क्योंकि पहले दो सिंगल्स शॉट के बाद हू आगे निकल गए. तोमर ने अपने 14वें शॉट के लिए 10.9 का स्कोर किया, जिससे वह सातवें स्थान पर पहुंच गए. सौरभ ने भी अपने 14वें शॉट के लिए 10.7 का स्कोर बनाया. इसके बाद सौरभ 15वें और 16वें शॉट में 10.2 और 10.6 के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गए।

मुम्बई और सनराइजर्स के बीच मुकाबला आज

मुंबई (ए)। मुंबई इंडियंस की टीम गुरुवार को अपने घरेलू मैदान पर सनराइजर्स हैदराबाद का मुकाबला करेगी। इस मैच में दोनो ही टीमें जीत के लिए पूरी ताकत लगा देंगी। मुम्बई को अपने घरेलू मैदान का लाभ मिलेगा जिससे उसका पलड़ा भारी नजर आता है। वानखेड़े स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के अनुकूल रही है, लेकिन गेंदबाज भी इससे मिलने वाली उछाल का फायदा उठाने की कोशिश करेंगे। मुम्बई को जीत के लिए सनराइजर्स के बल्लेबाजों को बड़े स्कोर बनाने से रोकना होगा। टीम इस मैच में अपने मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगी पिछले मैच में बुमराह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये थे। बुमराह की गेंदों पर दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मैच में काफी रन बने। ऐसे में सनराइजर्स के आक्रामक बल्लेबाज ट्रेविस हेड, अभिषेक शर्मा, ईशान किशन और हेनरिक क्लासेन उनपर बड़े शॉट लगाने का पूरा प्रयास करेंगे।मुंबई की परेशानी अपने स्टार बल्लेबाज रोहित शर्मा का फार्म में नहीं होना भी है। रोहित अभी तक पांच मैचों में एक बार भी बड़ा स्कोर नहीं बना पाये। वह अब तक केवल 56

रन बना पाए हैं। इससे मुंबई की टीम का प्रदर्शन भी खराब रहा है और वह अभी तक केवल दो मैच जीत जीत कर अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

मुंबई इंडियंस की की बल्लेबाजी अभी तक इस सत्र में सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा पर ही आधारित रही है पर अगर टीम को जीत दर्ज करनी है तो अन्य बल्लेबाजों को भी रन बनाने होंगे। वहीं दूसरी ओर सनराइजर्स की टीम भी अच्छी स्थिति में नहीं है। इस बार उसके बल्लेबाज रनों के लिए संघर्ष करते दिखे हैं। पहले मैच में टीम ने 286 रन बनाये थे पर उसके बाद से ही उसके लिए 200 रनों तक पहुंचा भी संभव नहीं हुआ है हालांकि पंजाब किंग्स के खिलाफ वह 246 रन के लक्ष्य तक पहुंचने में सफल रही जिससे टीम प्रेरित होना चाहेगी। पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच में अभिषेक ने 141 रन बनाए थे। अंक तालिका में सनराइजर्स की टीम अभी नौवें स्थान पर है।

मुंबई इंडियंस

हार्दिक पांड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, रियान रिकेल्टन (विकेटकीपर), सूर्यकुमार यादव, विल जैक, तिलक वर्मा, , नमन धीर, जसप्रीत बुमराह, ट्रेंट बोल्ट, मिचेल सेंटनर, कर्ण शर्मा।

सनराइजर्स हैदराबाद

पैट कमिंस (कप्तान), अभिषेक शर्मा, ट्रैविस हेड, ईशान किशन, नीतीश कुमार रेड्डी, हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), अनिकेत वर्मा, अभिनव मनोहर, मोहम्मद शमी, हर्षल पटेल, जीशान अंसारी, एहसान मलिंगा।

11 करोड़ अब होंगे वसूल, एलएसजी की टीम से जुड़ा 156.7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाला गेंदबाज

लखनऊ,(आरएनएस)। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज मयंक यादव की लखनऊ सुपर जायंट्स (आईपीएल) में वापसी की खबर क्रिकेट प्रशंसकों के लिए उत्साहजनक हैं. मयंक, जो अपनी रफ्तार भरी गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं, चोट के कारण कुछ समय तक बाहर थे. अब उनकी वापसी से आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन कर रही आईपीएल की टीम की गेंदबाजी इकाई को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

लखनऊ सुपर जायंट्स के तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट से रिकवरी हो गई है. एलएसजी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो पोस्ट कर इसकी जानकारी दी है. मयंक यादव आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन के बाद चोटिल हो गए थे. उन्होंने उस सीजन में केवल 4 मैच खेले, जिसमें 12.14 की औसत और 6.98 की इकोनॉमी रेट से 7 विकेट लिए. उनकी सबसे तेज गेंद 156.7 किमी/घंटा थी, जो उस सीजन में किसी भारतीय गेंदबाज की सबसे तेज गेंद थी।

ओलंपिक मेडलिस्ट मीराबाई चानू को मिली बड़ी जिम्मेदारी

-भारतीय भारोत्तोलन महासंघ एथलीट आयोग की बनी अध्यक्ष

नई दिल्ली, (आरएनएस)। पदक विजेता मीराबाई चानू को भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के एथलीट आयोग का अध्यक्ष चुना गया है. चानू ने कहा कि, वह इस भूमिका को साथी भारोत्तोलकों की आवाज को बुलंद करने के अवसर के रूप में देखते हैं.टोक्यो पदक विजेता मीराबाई ने एक विज्ञप्ति में कहा, मैं भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के एथलीट आयोग के अध्यक्ष के रूप में मुझे चुनने के लिए अपना बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं।

विराट ने कई पोस्ट हटाने पर दिया ये जवाब

मुम्बई (ए)। आजकल आईपीएल खेल रहे भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने अचानक ही अपने अकाउंट से प्रमोशन, पेड पार्टनरशिप और विज्ञापनों से जुड़े सभी पोस्ट हटा लिए हैं। उन्होंने इन पोस्ट्स को रील सेक्शन में डाल दिए दिया। कोहली के ऐसा करते ही सोशल मीडिया पर कई तरह ही अटकलें लगायी जाने लगीं। वहीं इसी को लेकर अब विराट ने अपनी ओर से सफाई दी है। कोहली के इंस्टाग्राम पर पोस्ट सेक्शन में अब उनकी फैमिली, वर्कआउट सेशन के साथ-साथ आईपीएल 2025 से जुड़ी कुछ फोटो और वीडियो ही हैं। इसी को लेकर विराट ने कहा कि मैं सोशल मीडिया को लेकर एक ऐसी जगह पर

पहुंच गया हूं जहां मैं बहुत ज्यादा इसपर ध्यान नहीं दे पाउंगा। भविष्य के बारे में कुछ भी कहना अभी से संभव नहीं है। इसी कारण मुझे काफी कुछ हटाना पड़ा है ।

चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद विराट कोहली की ब्रांड वैल्यू बढ़ गई है। इस बात को खुद विराट ने भी स्वीकार किया है। विराट कोहली के सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा फॉलोवर्स हैं। इंस्टाग्राम पर उन्हें 271 मिलियन और एक्स पर 67.7 मिलियन लोग फॉलो करते हैं। ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में कोहली दुनिया के शीर्ष एथलीटों में शामिल हैं। पिछले साल टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद कोहली ने टी-20 से संन्यास ले लिया था। इस फॉर्मेट में उन्होंने 125 मैच खेले हैं। उन्होंने एक शतक और 38 अर्धशतक के साथ 4188 रन बनाए हैं।

पेड़ों की कटाई, वन्य प्राणियों को बेघर करने पर जताई जा रही नाराजगी

सृष्टि सेवा संकल्प ने राष्ट्रपति के नाम सौंपा ज्ञापन, देश भर में आक्रोश

नर्मदापुरम (निप्र)। तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद स्थित हैदराबाद यूनिवर्सिटी के करीब 400 एकड़ क्षेत्र में फैले घने जंगल को मनमाने ढंग से काटा जा रहा है जिससे पर्यावरण प्रेमियों छात्रों और समाज सेवियों में आक्रोश फैल गया है। इस मुद्दे को लेकर सृष्टि सेवा संकल्प जिला नर्मदापुरम इकाई ने राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सोंपा।

ज्ञापन में राष्ट्रपति एकेंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री एमुख्यमंत्री को भी इस पर्यावरण विनाशकारी घटना पर संज्ञान लेकर उचित कार्यवाही करने का निवेदन किया गया है ।

क्या है पूरा मामला

हैदराबाद यूनिवर्सिटी के कांचा गाचीबोवली वाली क्षेत्र में स्थित लगभग 400 एकड़ के हरित क्षेत्र को जो की सनदहे;हैदराबाद शहर के फेफड़े के नाम से जाना जाता है को 30 मार्च से 2 अप्रैल के बीच आईटी पार्क निर्माण के बहाने से तेजी से काटा गया। करीब 700 से अधिक प्रजातियों के पेड़ और पौधे हैं इसके अलावा 200 से अधिक प्रजातियों के पक्षियों का भी यह वन क्षेत्र आश्रय है। पिछले दिनों जब इस जंगल पर कुल्हाड़ी चली तो वन्य जीव प्रेमियों समेत आम नागरिकों ने भी आपत्ति जताई। भौगोलिक विश्लेषकों और सैटेलाइट इमेजो के अनुसार इस दौरान करीब दो वर्ग किलोमीटर का घना वन क्षेत्र बुरी तरह उजाड़ दिया गया पेड़ों की कटाई के चलते वहां के प्राकृतिक निवासी जैसे नीलगाय हिरण मोर और अन्य पक्षी एवं जंगल के जीव बेघर हो गए हैं तथा उनकी चीख पुकार के दृश्य सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं जिसने पूरे देश के पर्यावरण प्रेमियों को झकझोर दिया है।

स्थानीय निवासियों और पर्यावरणविदो द्वारा इस पूरे प्रकरण को सर्वोच्च न्यायालय में प्रस्तुत किया गया था। न्यायालय ने अंतरिम आदेश जारी करते हुए जंगल की कटाई पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है और इस घटनाक्रम की जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जंगल की कटाई रोकने हेतु आदेश पारित कर दिए हो परंतु जो विनाश किया जा चुका है उसकी भरपाई एक मुश्किल लेकिन संभव कार्य है और इस विनाश से हुए नुकसान को समाप्त करने के लिए सार्थक कदम उठाना बहुत आवश्यक है। इसकी भरपाई हेतु जिम्मेदारों को जितनी क्षेत्र की कटाई हो चुकी हो उसे क्षेत्र को वृक्षारोपण कर पुन: हरा भरा बनाकर जंगल विकसित करने हेतु निर्देशित करने का कष्ट निर्देशित करने का कष्ट करें । हम सभी सृष्टि सेवकों द्वारा विनम्रता पूर्वक प्रार्थना है कि भविष्य में इस तरह से भयावह कार्यवाही ना हो इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्देश बनाए जाने चाहिएए जिससे भविष्य में हम ऐसी दुर्घटना से पर्यावरण का बचाव कर सकें।ज्ञापन देने वालों में नरेंद्र यादव, एससी सराठे डीएस डांगी विवेक शर्मा अमन गौर विशाल दीवान विमलेश कीर देव मालवीय रजत यादव अनिल आर्य अमित नामदेव प्रिंस साहू प्रमोद दुबे अर्पित दीक्षित नलिन पटेल राजेन्द्र जोशी मिहिर श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गाँधी, राहुल गाँधी पर ईडी की कार्रवाई के विरोध में ज्ञापन सौंपा

नर्मदापुरम (निप्र)। कांग्रेस पार्टी की वरिष्ठ नेता श्रीमती सोनिया गाँधी विपक्ष के नेता राहुल गाँधी पर केंद्र सरकार के इशारे पर ईडी द्वारा की गई विद्वेष पूर्ण कार्रवाई के विरोध में नगर कांग्रेस द्वारा स्व. पत्रकार प्रशांत दुबे चौक पर विरोध प्रदर्शन किया गया एवं राष्ट्रपति के नाम पर तहसीलदार डीएस धुर्वे को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन मे राष्ट्रपति से स्वत: संज्ञान लेकर केंद्र सरकार से इस मामले में प्रश्न करने एवं पूरे मामले की निष्पक्ष जाँच करने की मांग की गई। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष शिवाकांत पाण्डेय महासचिव केलू उपाध्याय नगर कांग्रेस अध्यक्ष धर्मेन्द्र तिवारी मधुसूदन यादव चंदगोपाल मलैया अनोखी राजोरिया बाबू चौधरी कुलदीप पटेल महेश पाण्डेय जीजी जोसफ फेजान उल हक श्याम दुबे राकेश दुबे कमलेश बाथरे राजेंद्र दोहरे अशोक अहिरवार विशाल प्रधान धीरज बहुत्रा संतोष तोमर जागेश यादव प्रकाश यादव गुलाम हैदर कपिल यादव आजाद भाटिया कैलाश मांझी नसीम कुरैशी प्रताप ठाकुर रिजवान प्रहलाद आठनेरे चंद्रकांत संतोष अहिरवार सहित अन्य कांग्रेसजन उपस्थित रहे।

अंबेडकर प्रतिमा पर छतरी नहीं लगा सके भाजपाई नेता-मीना वर्मा

नर्मदापुरम (निप्र)। पूर्व नपाध्यक्ष व प्रदेश कांग्रेस महामंत्री मीना वर्मा ने कहा कि जब मैं नगर पालिका की अध्यक्ष थी तब मेरे कार्यकाल में ही डॉ अंबेडकर की प्रतिमा स्थापित की गई थी। प्रतिमा परिसर में सौदर्यीकरण करवाया था। फब्बारे लगवाए थे। उस स्थान पर रौनक बन गई थी। तब से कोई सुधार नहीं हो सका है। भाजपा ने प्रतिमा के सामने अपना कार्यालय तो चकाचक कर लिया। लेकिन जब से लेकर अब तक भाजपा के अनेक नपाध्यक्ष हो गए। अनेक विधायक हो गए अनेक सांसद हो गए। भाजपाईयों ने कार्यालय के सामने अंबेडकर की प्रतिमा पर छतरी तक नहीं लगवा सके। ये लोग डॉ अंबेडकर के संविधान की बात करते हैं। प्रतिमा पर माल्यापर्ण करके बाबा साहेब के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने का नाटक करते हैं। लेकिन प्रतिमा पर एक छतरी तक नहीं लगवा सके। विकास के खोखले वादे करते हैं। अब नागरिक इनकी चालबाजियों को समझने लगें हैं।

नाले नालियों से अतिक्रमण हटाने के अध्यक्ष व सीएमओ ने दिए निर्देश

व्यापारीगणों से नाला चौड़ीकरण हेतु बनी सहमति

नर्मदापुरम (निप्र)। नगरपालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले द्वारा बुधवार को बाजार क्षेत्र का निरीक्षण कर नाले नालियों पर किए गए अतिक्रमण की जानकारी ली। इस दौरान किराना व्यापारी संघ के अध्यक्ष महेंद्र चौकसे व्यापारी नितेश खंडेलवाल और अन्य व्यापारियों से चर्चा कर बारिश पूर्व नाले नालियों पर किए गए अतिक्रमण हटाने अमानक स्तर की पालिथिन का उपयोग बंद करने और अतिक्रमण हटाने में सहयोग करने के लिए सहमति बनी। 'निरीक्षण के दौरान विधायक प्रतिनिधि महेंद्र यादव पार्षद प्रतिनिधि जीतू तिवारी अतुल भंडारी सहित अतिक्रमण दल प्रभारी सुनील राजपूत स्वच्छता उपनिरीक्षक संजय लुटारे आदि उपस्थित थे।

बारिश पूर्व होंगे नाले नालियां साफ

बारिश पूर्व जल भराव की स्थिति न बने इसके लिए नगरपालिका प्रशासन द्वारा पहले से ही तैयारी की जा रही है। अतिक्रमण दल प्रभारी सुनील राजपूत ने बताया कि नगरपालिका अध्यक्ष और मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने बाजार क्षेत्र के नाले नालियों से अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। नाले नालियों पर ढंके कवर को हटाकर सफाई चलाया जाएगा। वहीं बाजार क्षेत्र के मुख्य नाले के चौड़ीकरण के लिए किराना व्यापारी संघ महेंद्र चौकसे व्यापारी नितेश खंडेलवाल के साथ अन्य व्यापारियों से चर्चा की गई।

तालाब गहरीकरण कर जल संवर्धन की दिशा में उठाया महत्वपूर्ण कदम

विधायक विजयपाल सिंह ने तालाब गहरीकरण कार्य में किया श्रमदान

नर्मदापुरम (निप्र)। जनपद पंचायत माखननगर की ग्राम पंचायत आचलखेड़ा में जलगंगा संवर्धन अभियान के तहत तालाब गहरीकरण का कार्य किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सोहागपुर विधायक विजयपाल सिंह उपस्थित रहे।विधायक श्री सिंह ने जनप्रतिनिधियों एवं ग्राम वासियों के साथ मिलकर श्रमदान किया और मानव श्रृंखला बनाकर जल संरक्षण का संदेश दिया। तालाब के गहरीकरण से वर्षा काल में अधिक जल संचयन संभव हो सकेगा, जिससे न केवल सिंचाई की सुविधा बेहतर होगी बल्कि भूमिगत जल स्तर में भी वृद्धि होगी। विधायक विजयपाल सिंह ने इस अवसर पर ग्रामीणों को जल संरक्षण के महत्व को समझाते हुए कहा कि जल ही जीवन है और इसके संरक्षण के लिए हमें सामूहिक रूप से आगे आना होगा। उन्होंने ग्राम वासियों को अभियान में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

समेरिटंस के विद्यार्थियों ने तूलिका से उकेरी संविधान की 75 वर्ष की गाथा

नर्मदापुरम (निप्र)। भारतीय गणतंत्र के 75 वर्ष पूर्ण होने पर सीबीएसई द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी तारतम्य में समेरिटंस विद्यालय सांदीपनी परिसर मालाखेड़ी के हायर सेकेंडरी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने संविधान की गाथा को अपनी तूलिका के माध्यम से उकेरा। सीबीएसई द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता के लिए संविधान के प्रावधान 51 के अंतर्गत मौलिक कर्तव्य एवं पर्यावरण संरक्षणए मौलिक अधिकार और सतत विकास विषय निश्चित किए गए थे। कक्षा 9 से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए यह प्रतियोगिता एकल एवं समूह दो वर्गों में आयोजित की गई। इसमें समूह वर्ग में अनेघा ताम्रकार लावण्या ताम्रकार श्रिया दुबे दिव्या चौरे व श्रुति चौरे प्रथम साक्षी यादव व चारू चीचम द्वितीय और पावनी शुक्ला ऋशिका तिवारी जिज्ञासा सोनटके निहारिका पटेल पायल पटेल पलाश दुबे व करन चावरा तृतीय रहे। जबकि एकल वर्ग में प्रकृति कोरी प्रथम परीज्ञा राजपूत द्वितीय और मान्या रघुवंशी तृतीय रही। स्पर्धा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को डायरेक्टर डा आशुतोष शर्मा और प्राचार्य श्रीमती प्रेरणा रावत ने उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का संचालन संजय लायल ने किया।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत पलकमती नदी जीर्णोद्धार हेतु श्रमदान

वन विभाग सोहागपुर का सराहनीय प्रयास - जल संरक्षण के लिए लिया संकल्प

नर्मदापुरम (निप्र)। जल संरक्षण एवं नदी पुनरुद्धार के उद्देश्य से जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत वन परिक्षेत्र सोहागपुर के वन अमले द्वारा पलकमती नदी के संरक्षण एवं पुनरुद्धार के लिए सफाई एवं श्रमदान किया गया। इस अवसर पर वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने मिलकर नदी क्षेत्र में जमा कचरे की सफाई की और जलधारा को पुनर्जीवित करने हेतु सामूहिक प्रयास किए। यह पहल पर्यावरण संरक्षण, जल स्त्रोतों के संवर्धन एवं स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वन विभाग ने आमजन से भी अपील की कि वे इस प्रकार के अभियानों में सक्रिय भागीदारी करें और नदी बचाओ - जल बचाओ का संकल्प लें। नदियों को स्वच्छ, संरक्षित और सतत प्रवाहमान बनाए रखने के लिए सामूहिक सहभागिता आवश्यक है। इस मौके पर वन विभाग के अधिकारियों ने संदेश दिया कि प्राकृतिक जल स्त्रोतों की रक्षा प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व है और हम सभी को मिलकर इस दिशा में निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

जैविक खाद का उपयोग हमारे कृषि परिदृश्य को बदल सकता है : कलेक्टर सोनिया मीना

जर्मनी की कंपनी जीआईजेड के सहयोग से ग्रामपंचायत रंढाल में स्थापित की गई है इकाई महिला सशक्तिकरण और प्राकृतिक खेती की ओर एक सशक्त कदम

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले की कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने बुधवार को ग्राम पंचायत रंढ़ाल में जर्मनी की कंपनी जीआईजेड के सहयोग से निर्मित प्रदेश के पहले जैविक संसाधन केंद्र एवं बायो प्रोम जैविक खाद निर्माण इकाई का शुभारंभ किया। यह इकाई जर्मनी की कंपनी जीआईजेड के सहयोग से ग्राम पंचायत रंढ़ाल में स्थापित की गई है। महिला शक्ति संकुल स्तरीय संघ द्वारा संचालित बायो-रिसोर्स सेंटर (BRC) एवं बायो प्रोम निर्माण इकाई का उद्घाटन समारोह रंढाल गौशाला, नर्मदापुरम में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

शुभारंभ अवसर पर कलेक्टर, सुश्री सोनिया मीना ने कहा कि प्रदेश का प्रथम बायो-रिसोर्स सेंटर में बनाये जैविक खाद से हमारे कृषि का परिदृष्य बदल जाएगा। साथ ही खाद निर्माण इकाई द्वारा मूल रूप से गौवंश से प्राप्त गोबर से किण्वित तरल जैविक खाद का निर्माण किया जाएगा। इस पूरी योजना का उद्देश्य है की योजना से जुड़ कर क्षेत्र की गौशालाएं आत्मनिर्भर बनें, रासायनिक खाद पर किसानों की निर्भरता को कम किया जाए साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में मध्य प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत संचालित महिला स्व सहायता समूह एवं संगठनों को आजीविका उपलब्ध हो सके। इस अवसर पर कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने इस सेंटर की भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह केंद्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। सरकार की ओर से इस पहल को हर संभव सहायता दी जाएगी, जिससे यह मॉडल राज्य के अन्य जिलों में भी दोहराया जा सके।

उन्होंने गौशाला के बहुआयामी उपयोग, जैविक एवं प्राकृतिक खेती और महिला सशक्तिकरण को जोड़ते हुए इसे एकीकृत ग्रामीण विकास का आदर्श उदाहरण बताया। समारोह का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों द्वारा रिबन काटकर संयंत्र का उद्घाटन किया गया एवं बायो-रिसोर्स यूनिट का अवलोकन किया गया। GIZ के प्रतिनिधि राजीव आहूजा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं कार्यक्रम की रूपरेखा साझा की। इसके उपरांत दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का औपचारिक आरंभ हुआ। GIZ की प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्रीमती उटे रिकमन ने अपने मुख्य संबोधन में बताया कि यह बायो-रिसोर्स सेंटर स्थानीय महिलाओं के लिए आय वृद्धि एवं सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बनेगा।

जल गंगा संवर्धन अभियान : ग्राम पंचायत बनाडा में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत नदी पर स्टॉप डैम में गेट लगाकर किया गया जल संचयन

नर्मदापुरम (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत ग्राम पंचायत बनाडा में जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की गई। गांव में स्थित नदी पर बनाए गए स्टॉप डैम में गेट लगाकर पानी को रोका गया, जिससे नदी का जल स्तर बढ़ाया जा सके। अब इस कार्य से क्षेत्र के किसानों को सिंचाई हेतु पर्याप्त जल भी उपलब्ध हो सकेगा। इस जनहितकारी कार्य को सफल बनाने में ग्रामवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और श्रमदान के माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराई। यह पहल न केवल जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि गांव के कृषि क्षेत्र को भी सशक्त बनाएगी।

औद्योगिक इकाइयों को रुफ वाटर सिस्टम लगाने के लिए प्रेरित किया जाए : कमिश्नर श्री तिवारी

औद्योगिक इकाइयों के परिक्षेत्र पर विस्तृत रूप से पौधरोपण किया जाए

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम संभाग कमिशनर कृष्ण गोपाल तिवारी ने संभाग के सभी महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र को निर्देश दिए कि वह औद्योगिक इकाइयों के संचालकों को अपने औद्योगिक परिसर में रूफ वाटर सिस्टम लगाने के लिए प्रेरित करें। कमिशनर ने कहा कि बारिश का पानी बचाना अति आवश्यक है। सभी महाप्रबंधक जिला व्यापार उद्योग केंद्र अपने-अपने जिले में स्थापित सभी औद्योगिक इकाइयों में जाकर औद्योगिक इकाइयों के संचालकों को औद्योगिक इकाइयों के परिक्षेत्र में वृहद स्तर पर पौधरोपण करने के लिए भी प्रेरित करें। पौधरोपण में सीएसआर फंड से भी सहयोग राशि ली जाए। कमिश्नर ने निर्देश दिए की पौधरोपण करने के पश्चात सभी व्यक्ति वायु दूत एप पोर्टल में पौधों के साथ अपनी फोटो भी अपलोड करें। उल्लेखनीय है कि नर्मदापुरम संभाग कमिशनर कृष्ण गोपाल तिवारी बुधवार को जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, खादी एवं ग्रामोद्योग तथा जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग की संभागीय समीक्षा बैठक ले रहे थे। कमिशनर श्री तिवारी ने निर्देश दिए की सभी महाप्रबंधक अपने-अपने जिले की ऐसी औद्योगिक इकाइयों का सर्वे करना भी सुनिश्चित करें जिनका वेस्ट मटेरियल, गंदा पानी एवं अपशिष्ट बह कर नदी एवं नालों में जा रहा है।कमिशनर ने निर्देश दिए की सभी महाप्रबंधक समय-समय पर औद्योगिक इकाइयों का निरीक्षण अनिवार्य रूप से करें। कमिशनर श्री तिवारी ने उद्योग विभाग की भगवान बिरसा मुंडा योजना की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि इस योजना के तहत हितग्राहियों के ऋण राशि के प्रकरण प्राथमिकता से बैंक में लगाए भिजवाए जाएं एवं यह भी सुनिश्चित किया जाए की सभी प्रकरण बैंक में स्वीकृत हो जाए। कमिशनर ने ऐसी सेमी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हरदा, बैतूल एवं

नर्मदापुरम जिले के अधिक से अधिक हितग्राहियों के ऋण प्रकरण स्वीकृत करने के निर्देश दिए।

मई में आयोजित किए जाएंगे समर कैंप

जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग की समीक्षा के दौरान जिला खेल अधिकारी उमा पटेल ने बताया कि मई महीने में जिले के सभी ब्लॉकों में नि:शुल्क समर कैंप का आयोजन किया जाएगा। यह समर कैंप 1 महीने तक आयोजित किये जायेंगे। इस कैंप के माध्यम से बच्चों के खेल के टैलेंट को चिन्हित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आठ से 18 वर्ष तक के बच्चे समर कैंप में शामिल हो सकते हैं।

हैप्पी सीडर नरवाई प्रबंधन की हाई टेक विधि : कृषि मंत्री श्री कंषाना

नर्मदापुरम (निप्र)। किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि नरवाई जलाने से खेतों की उर्वरा शक्ति को नुकसान पहुंचता है। नरवाई जलाने के नुकसान को रोकने के लिए कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि हैप्पी सीडर द्वारा फसल काटकर सीधे बोनी की जाती है। नरवाई से मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। नरवाई मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ जोड़ती है, जिससे मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता और उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इसके साथ ही नरवाई मिट्टी की सतह को ढंककर रखती है, जिससे वाष्पीकरण कम होता है और मिट्टी में नमी बनी रहती है। मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि नरवाई खरपतवारों के अंकुरण और विकास को दबाने में भी मदद करती है। यह मिट्टी को बहने और कटने से बचाती है और धीरे-धीरे विघटित होकर मिट्टी में पोषक तत्वों को वापस लाती है। नरवाई मल्च के रूप में कार्य करती है, जो शून्य जुताई जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। ग्रीष्मकालीन मूंग की बोनी में नरवाई प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पिछली फसल की कटाई के बाद नरवाई को खेत में ही छोड़ दें और यदि नरवाई बहुत अधिक है, तो उसे काटकर फैला दें ताकि मूंग की बोनी में आसानी हो। यह विधि मिट्टी की नमी बनाए रखने, खरपतवारों को दबाने और मिट्टी के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती है।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक एव ब्यूरों प्रमुख श्री कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं. 21, सेक्टर-एच, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा ''शिवरानी भवन'', क्षितिज किरण स्ट्रीट, कोठी बाजार, नर्मदापुरम (होशंगाबाद) से प्रकाशित।
स्थानीय ब्यूरों प्रमुख श्री बलराम शर्मा सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो. 9425025999 (नर्मदापुरम मो. 9926434695) ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com